GARM HAVA

(Scorching Wind)

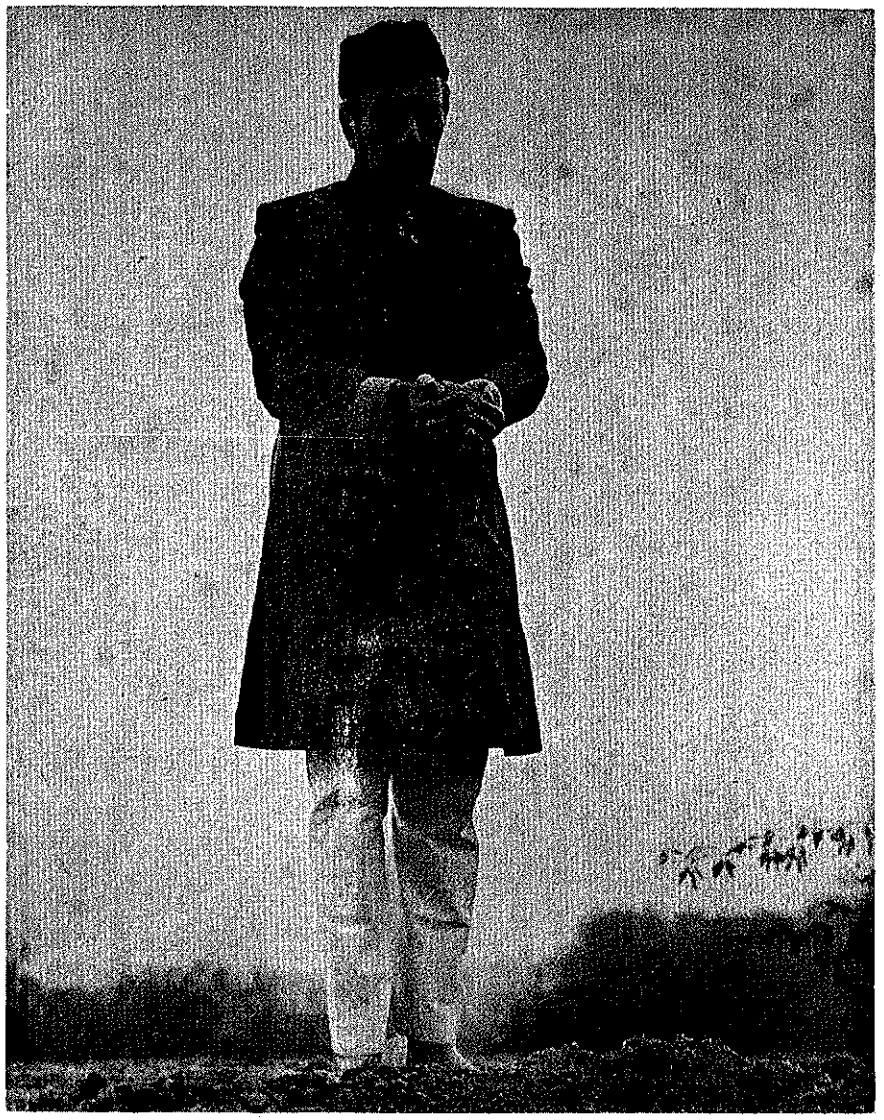

गर्म हवा

इसमत चुग़ताई की एक अप्रकाशित कहानी पर आधारित फ़िल्म

पटकथा: कैफ़ी आज़मी
शमा ज़ैदी

निर्देशन: म० स० सथ्यू

बम्बई १९७४

पात्र

सलीम मिर्ज़ा:	फ़िल्म का मुख्य पात्र । वह जूते का कारख़ाने की देखभाल करते हैं ।
हलीम मिर्ज़ा:	सलीम मिर्ज़ा का बड़ा भाई । दोनों मिलकर कारख़ाने को चलाते हैं । पार्टीशन के वक़्त हलीम मिर्ज़ा लीडरी में व्यस्त है ।
अम्मी:	सलीम मिर्ज़ा की बीवी, उसका नाम जमीला है ।
दादी:	सलीम मिर्ज़ा की माता
बाकर मिर्ज़ा:	सलीम मिर्ज़ा का बड़ा बेटा
सिकन्दर मिर्ज़ा:	सलीम मिर्ज़ा का छोटा बेटा
आमिना:	सलीम मिर्ज़ा की बेटी
काज़िम मिर्ज़ा:	हलीम मिर्ज़ा का बेटा
अख़्तर बेगम:	सलीम मिर्ज़ा की बहन
फ़ख़रुद्दीन:	अख़्तर बेगम का पति और बाकर मिर्ज़ा का फूफा और ससुर
सलमा:	फ़ख़रुद्दीन की बड़ी बेटी
मोसिना:	फ़ख़रुद्दीन की छोटी बेटी
शमशाद:	फ़ख़रुद्दीन का बेटा
मुन्ना:	बाकर मिर्ज़ा और सलमा का बेटा । सलीम मिर्ज़ा का पोता
प्यारेलाल:	सलीम मिर्ज़ा का ख़ज़ांची
अजमानी साहब:	कराची से आया हुआ व्यापारी
पूनमचन्द:	एक साहूकार

और व्यापारी, परिवार के लोगों के यार - दोस्त, नौकर - चाकर, कारीगर, इत्यादि

स्थान: आगरा

एक आवाज़: हिन्दुस्तान की आज़ादी: सन् १९४७ १

०० स्क्रीन पर आज़ादी के वक़्त की तस्वीरें दिखाई २
जाती हैं, जिनमें दोनों देशों के नेता प्रधान हैं ।
इंजन, गाड़ी की सीटी और गाड़ी की गड़गड़ाहट की
मिली-जुली आवाज़ ।

०० गोलियों की आवाज़ । ३

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़: तक़सीम हुआ मुल्क तो दिल हो गये टुकड़े ४
हर सीने में तूफ़ान वहां भी था यहां भी
हर घर में चिता जलती थी, लहराते थे शोले
हर शहर में शमशान वहां भी था यहां भी
गीता की कोई सुनता, न क़ुरान की सुनता
हैरान-सा ईमान, वहां भी था यहां भी

०० गाड़ी की आवाज़ का शोर चारों ओर फैलता है । ५
लोगों के बोलने की मिली-जुली आवाज़ें सुनाई दे रही हैं
और साथ गाड़ीवानों की आवाज़ें आ रही हैं ।

गाड़ीवान: अरे अरे कहां को जा रिया, पूछ तो लेन दे । ६
हां मियां, कहां को चलूं, हवेली या ...

सलीम: कारख़ाने । ७

गाड़ीवान: कारख़ाने । चलो बादशाह, मियां को कारख़ाने ८
छोड़ दो ।... आज किसे छोड़ आये मियां ?

सलीम: बड़ी बहन को । बहनोई साहब तो पहले ही कराची जा ९
चुके थे । आज उनके बाल-बच्चे भी चले गये । कैसे
हरे-भरे दरख़्त कट रहे हैं इस हवा में ।

गाड़ीवान: बड़ी गरम हवा है मियां, बड़ी गरम । जो उखड़ा नहीं १०
झुलस जावेगा मियां और फिर एक शायर ने कहा है न
मियां --
वफ़ाओं के बदले, जफ़ा कर रिया है
मैं क्या कर रिया हूं, तू क्या कर रिया है ?
०० घोड़े से ०० चल ... बादशाह ।

सलीम: यहां दंगे फ़साद पहले भी होते थे लेकिन इस तरह कोई ११
अपना घरबार छोड़ कर नहीं भागता था ।

गाड़ीवान: अरे तब भाग कर जाते कहां ? अल्लाह मियां ने अब १२
पाकिस्तान जो बना दिया है फिर कौन आराम ?

हट जा रे बीच में से, हे साइकिल वाले, बादशाह ।
जब से यह भागम-भाग लगी है न मियां, अपने लौंडे को
भी तांगा करा दिया है, हां ।

सलीम: इसीलिये अभी तक कराची नहीं गये । १३

गाड़ीवान: अरे मियां, मैं काहे को जाऊंगा । सुना है कि कराची १४
मैं ऊंट-गाड़ी चले है । बाप-दादा ने घोड़े जाते । मैं
ऊंट जोतूं तो रूह नहीं फड़फड़ायेगी उनकी जन्नत मैं
का ? ..... एक बात जरूर कहूंगा । हमारे यहां के
हिन्दू भाई बहुत अच्छे हैं और जो कुछ करें सो करें पर
चमड़े के काम को कभी हाथ नहीं लगाते । और जो उधर से
आये हैं ये तो धन्धे के पीछे धरम का भी लिहाज़ नहीं
करेंगे यहां । मैं तो कहूं कि एक दिन तिकोनिया बाज़ार भी
इनके कब्ज़े में होगा । ..... चलें बादशाह । .....
देखो मियां, हमारा बादशाह भी तुम्हारे कारख़ाने का
रस्ता पहचाने है । ..... सलाम मियां ।

०० कारख़ाने के कुछ लोग खड़े आपस में बातें कर रहे हैं । १५

कारीगर: अरे अरे पढ़ यार पढ़, ठीक है, ठीक है, पढ़ यार, ठीक है । १६

कारीगर: महात्मा गांधी की क़ुर्बानी रंग लाई । दिल्ली में हिन्दू- १७
मुसलमान गले मिलने लगे ...

शकूर: सब बकवास । अबे, यह कहां का अख़बार है ? १८

कारीगर: यह दिल्ली का है । १९

शकूर: अबे, इसे क्या ख़बर दिल्ली में क्या हो रहा है ? २०
०० जेब से दूसरा अख़बार निकालते हुए ०० ले, यह पढ़ ।

कारीगर: मिस्त्री, यह तो लाहौर का है । २१

शकूर: अबे, तभी तो यह सरी-सरी बातें लिखेगा । इसे कौन २२
रोक सके है ?

कारीगरों की आवाज़ें: सही है, सही है । २३

कारीगर: गांधी जी ..... अरे मियां आ गये । मियां आ गये । २४

शकूर: चलो, भाइयो, चलो । लगो काम में । २५

सलीम: शकूरा २६

शकूर: सलाम मियां, सलाम । २७

सलीम: ये सब लोग कहां हैं, आये नहीं अभी तक ? २८

शकूर: हूं, कहां से आयेंगे ? कुछ तो कराची चले गये और कुछ ... २९

सलीम: जा रहे हैं । ३०

शकूर: जी हां । ३१

सलीम: तुम इन्हें समझाओ । गांधी जी की शहादत के बाद यहां ३२
कोई ख़ून-ख़राबा नहीं होगा ।

शकूर: जी हां । मैं यही तो समझा रिया हूं । ०० क्यों भई, ३३
सच-सच बोलियो ।

कारीगर: हां, मियां, हां । मिस्त्री साहब यही समझा रहे थे । ३४

शकूर: ०० हंसता है ०० मगर मेरी सुने कौन है ? वह बशीरा ३५
है न, वही अपना लड़का, अपर मैं, कराची जाके कारख़ानेदार
हो गया है, मूअर ।

सलीम: किसी सिन्धी का कारख़ाना प्लाट हो गया होगा । ३६

शकूर: जी हां, रोज़ किसी न किसी को ख़त लिखे है । ३७

सलीम: क्या लिखता है ? ३८

शकूर: लिखेगा क्या ? यही लिखता है यहां अच्छा काम चल रिया ३९
है । ड्योढ़ी डूनी पगार मिल रही है ।

सलीम: मगर कब तक मिलेगी ? जब सिन्धियों और पंजाबियों ने सोचा ४०
कि जो खेती उन्होंने अपने लिये बोयी है उसे यू० पी० और
बिहार का टिड्डी दल साफ़ कर रहा है तब क्या होगा ?

शकूर: हूं । यह बात तो है । ४१

०० बाकर हाथ में जूते का डिब्बा लिये कारख़ाने में आता है । ४२

बाकर: अब्बू जी, अब्बू जी, हमारे सैम्पल पास हो गये । ४३

प्यारेलाल: अजमानी साहब से आर्डर मिल गया ? ४४

बाकर: कैसे नहीं मिलता साहब ? ४५

सलीम: यही बात तुम्हारे ताया अब्बा की समझ में नहीं आती कि ४६
व्यापार, व्यापार ही होता है, मज़हब को कोई नहीं देखता ।

बाकर: देखता क्यों नहीं, लेकिन अपने यहां एक चीज़ मज़हब से भी ४७
बड़ी है ।

सलीम: क्या ? ४८

बाकर: रिश्वत ! मैंने पहुंचते ही इन्स्पेक्टर की मुट्ठी गर्म कर दी ४९
और फ़टपट अपना काम बन गया ।

प्यारेलाल: हां, मियां, आजकल इसके बिना किसकी दाल गले है ? ५०

बाकर: जी । ५१

प्यारेलाल: बस, अब बैंक से फ़टपट क़र्ज़ा मिल जाये । ५२

०० दृश्यान्तर । कुछ बच्चों का शोर सुनाई देता है । एक ५३
बच्चा, मुन्ना, अपने चचा जान के साथ छत पर पतंग उड़ा
रहा है ।

मुन्ना: काटिये, काटिये, चचा जान काटिये । ५४

काज़िम: हत् तेरे की । आओ दूसरी ओर लगाते हैं मुन्ने । यह तो ५५
कट गई ।

मुन्ना: आप यहं भी कटवा देंगे । ५६

काज़िम: कमबख़्त । मैंने जान के कटवाई थी ? ५७

मुन्ना: और क्या ? आप तो बार-बार नीचे देख रहे थे । ५८

काज़िम: बदतमीज़ । ०० काज़िम मुन्ने का कान मरोड़ता है ०० ५९

मुन्ना: आउ, कह दूंगा, कह दूंगा । ६०

काज़िम: क्या कहोगे ? ६१

मुन्ना: कल आपने गुसलख़ाने में क्या किया था । ६२

काज़िम: हूं । क्या किया था ? ६३

मुन्ना: आमिना फूफी का मुंह चूमा था । ६४

काज़िम: बदतमीज़ । भाग हट ... ६५

०० दृश्यान्तर । आमिना की अम्मी लाल रंग के दुपट्टे पर गोटा-सलमा टांक रही है । आमिना अम्मी के पास आती है । ६६

अम्मी: ०० हंसकर ०० तेरी शादी का है । ०० आमिना के सिर पर दुपट्टा डालते हुए ०० देखूं तो कैसी लगती है । ६७

०० तब तक सलीम मिर्ज़ा बेटी के पास पहुंच जाते हैं और दुपट्टा देखकर ख़ुश होते हैं । आमिना अब्बा को पहनी हुई चूड़ियां दिखाती है । ६८

आमिना: अब्बू जी, अब्बू जी, क्या ये चूड़ियां बहुत हैं ? ६९

सलीम: नहीं, नहीं गुड़िया, बहुत कम हैं । ७०

आमिना: अम्मां पैसे नहीं देती । ७१

सलीम: हूं, कितने चाहिये ? ७२

आमिना: बारह रुपये । ७३

०० सलीम मिर्ज़ा बारह रुपये जेब से निकालकर आमिना को देते हैं । ७४

अम्मी: आप का यह लाड़-प्यार तबाह कर देगा इसको । ससुराल जाके क्या करेगी ? ७५

सलीम: यह कहां पराये घर जा रही है ? ७६

०० आमिना दौड़कर चूड़ीवाली के पास जाती है । सलीम मिर्ज़ा आंगन के बाहर जाते हैं । ७७

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा घर में प्रवेश करते हैं । ७८

हलीम: बेगम । ०० बेगम को आवाज़ देते हुए सीधे अपने कमरे में घुस जाते हैं ०० ७६

दादी: ०० यह सब देखते हुए ०० सीधा घुस गया न अपने कमरे में ? जोरू का गुलाम । उल्लू का गोश्त खिला दिया है छोटी बेगम ने । ७६

०० तालियों की आवाज़ । हलीम मिर्ज़ा अपने कमरे में बैठा हुआ है । ८०

हलीम: बेगम, काश आज तुम जलसे में होतीं । मेरी तक़रीर सुनतीं और उसका असर देखतीं । लियाक़त अली ख़ां के चले जाने के बाद यू० पी० के मुसलमान सिर्फ़ मुझे अपना लीडर मानते हैं । ८१

छोटी बेगम: जलसे जलूसों से फ़ुर्सत मिले तो कुछ काज़िम मिर्ज़ा के बारे में भी सोचिये । ८२

हलीम: क्यों, क्या हुआ काज़िम मियां को ? ८३

छोटी बेगम: ऐ नौज, अल्लाह न करे उन्हें कुछ हो । ८४

हलीम: फिर क्या सोचूं ? ८५

छोटी बेगम: मैंने कहा, माशाल्लाह अब तो उसने बी० ए० भी पास कर लिया । ८६

हलीम: तीन साल नाकाम रहकर, चौथे हमले में बी० ए० कर लिया तो कौन-सा महमूद ग़ज़नवी बन गया । ८७

छोटी बेगम: तौबा है । आप से तो कोई बात भी नहीं कर सकता । मैं तो उसकी शादी की बात कर रही थी । अल्लाह रखे आमिना भी तो सयानी हो गई है । ८८

हलीम: बेगम, तुम्हें तो सिर्फ़ अपने बेटे की पड़ी है और मेरे सर पर सारी क़ौम का बोझ है । ८९

०० फ़्लैश बैक । जलसे का दृश्य । हलीम मिर्ज़ा भाषण दे रहा है । ९०

हलीम: मुस्लिम लीग के सारे लीडर हिन्दुस्तान के मुसलमानों को बेसहारा छोड़कर भाग गये । अब ऊपर ख़ुदा, नीचे मैं । और सारा हिन्दुस्तान मेरे ख़ून का प्यासा है । ०० तालियां ०० लेकिन हिन्दुस्तान हमारा वतन है । यह ताज महल, यह फ़तेहपुर सीकरी, यह सलीम चिश्ती की दरगाह, जो लोग अपनी इन मुक़द्दस यादगारों को छोड़कर भाग रहे हैं वह बुज़दिली का शिकार हैं । उन्हें अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं रहा । यहां के सारे मुसलमान चले जाएं, फिर भी एक मुसलमान, कम से कम एक मुसलमान यहां से कभी नहीं जायेगा, वह जब तक ज़िन्दा है यहीं रहेगा । और उस मुसलमान का नाम है हलीम मिर्ज़ा । ०० तालियां ०० ९१

हलीम: ०० अपने कमरे में बीवी से ०० अब मैं भी यहां नहीं रह सकता । अब हिन्दुस्तान में किसी मुसलमान के लिये कोई ९२

जगह नहीं । इसलिये हमें फ़ौरन यह हवेली और कारख़ाना बेचकर पाकिस्तान के लिये रवाना हो जाना चाहिये । ये सिन्धी और ये पंजाबी इसलिये वहां से भागकर आये हैं कि वहां का सारा कारोबार ठप हो जाये । इसलिये इस वक़्त हम वहां पहुंचकर कारख़ाना लगायें तो कारख़ाना भी चल जायेगा और पाकिस्तान भी । आज हक़्क़-ओ-बातिल में ज़बरदस्त टकराव है, ज़बरदस्त कशमकश है । जवाहरलाल कहते हैं यह रोटी-रोज़ी का झगड़ा है । मैं कहता हूं, ग़लत । रोटी के लिये सिर्फ़ कुत्ते लड़ते हैं ।

०० दृश्यान्तर । मिर्ज़ा परिवार खाने पर बैठा है । ९३

दादी: हलीम मिर्ज़ा । कान खोलके सुन लो, यहां तुम्हारे अब्बा जी की हड्डियां दफ़न हैं, मैं उनको छोड़के कहीं नहीं जाने की । ९४

हलीम मिर्ज़ा: ना, रहने पायेंगी, तब रहेंगी ना । ९५

दादी: हैं, मुझे कौन निकालेगा ? अपनी हवेली में रहती हूं । ९६

हलीम: हवेली के बाहर जो कुछ हो रहा है, उसका अन्दाज़ा नहीं आप को । ९७

सलीम: गांधी जी की क़ुर्बानी रायगान नहीं जायेगी । चार दिन के अन्दर-अन्दर सब ठीक हो जायेगा । ९८

हलीम: हूं । ... बाकर मियां, तुम्हारी क्या राय है ? ९९

बाकर: ताया अब्बा, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, यूरोप, अफ़्रीक़ा, मेरे लिये सब बराबर हैं । इन्सान जहां इज़्ज़त से दो रोटी कमा सके, उसे वहीं रहना चाहिये । १००

हलीम: रोटी सब कुछ नहीं । १०१

सिकन्दर: अगर इस वक़्त आप लोगों ने हिन्दुस्तान छोड़कर जाने का फ़ैसला किया तो ... १०२

अम्मी: सिकन्दर । बड़ों के बीच में नहीं बोला करते । १०३

सिकन्दर: मैं तो यह पूछ रहा था, मेरी तालीम का क्या होगा ? १०४

हलीम: क्यों ? क्या वहां कालेज नहीं हैं ? १०५

मुन्ना: अब्बा जी । १०६

बाकर: फ़रमाइये । एक आप ही की कमी थी । १०७

मुन्ना: पाकिस्तान में पतंग उड़ते हैं? १०८

०० सभी हंसने लगते हैं । १०९

काज़िम: हां उड़ते हैं । लेकिन जो बच्चे पतंग कट जाने पर रोते हैं उन्हें वहां पतंग उड़ाने की इजाज़त नहीं । ११०

मुन्ना: कह दूंगा । १११

सलीम: क्या ? ११२

काज़िम: कुछ नहीं चचा जान । मैंने इसे पतंग दिलाने का वादा किया था । आज दिला दूंगा । ११३

मुन्ना: और मांझा भी । ११४

काज़िम: हां हां, मांझा भी दिला दूंगा ।

हलीम: भई, तुम लोग यहीं रहना चाहते हो, खुशी से रहो, खुदा तुम्हारी मदद करे । मेरा जाना यूं भी ठीक नहीं है, इससे हिन्दुस्तानी मुसलमानों की हिम्मत टूट जायेगी । ११५

०० आमिना और काज़िम भिर्ज़ा एक दूसरे से क़त पर मिलते हैं । ११६

काज़िम: मन्नो । ०० उसकी ओर झुकता है ०० ११७

आमिना: हूं । नहीं, नहीं । कोई देख लेगा । ११८

काज़िम: सब कमरे बन्द हैं । ०० इतने में मुन्ना क़त पर आता है ०० ११९

काज़िम: ०० मुन्ने को ०० कमबख्त, इस धूप में क्या कर रहा है तू ? जाओ, कमरे में जाओ । १२०

मुन्ना: आप गुसलखाने में जाइये न, मुझको पानी पीना है । १२१

काज़िम: ०० मुन्ने के जाने के बाद ०० बड़ा शैतान है । १२२

आमिना: आप से कम । १२३

०० नीचे से हलीम भिर्ज़ा और छोटी बेगम की आवाज़ें सुनाई देती हैं । छोटी बेगम भिर्ज़ा साहब के हाथ धुला रही है । १२४

हलीम: अभी शादी की कोई जल्दी नहीं, नौकरी तो मिल जाये । १२५

छोटी बेगम: बी० ए० पास कर लिया है तो नौकरी भी मिल जायेगी । १२६

हलीम: बी० ए० पास कर ले या एम० ए० । अब हिन्दुस्तान में किसी मुसलमान लड़के को नौकरी नहीं मिल सकती । १२७

छोटी बेगम: फिर कहां मिलेगी ? १२८

हलीम: पाकिस्तान । १२९

०० यह सुनकर आमिना कमरे के अन्दर चली जाती है । १३०

काज़िम: अरे सुनो तो । मन्नो । बात तो सुनो, मन्नो । १३१

०० दृश्यान्तर । सलीम भिर्ज़ा का कमरा । भिर्ज़ा साहब अख़बार पढ़ रहे हैं । अम्मा सुराही लाकर सुराहीदान पर रखती हैं । १३२

अम्मी: भाई साहब कहते तो हैं कि जल्दी लौट आयेंगे, मगर मुझे भरोसा नहीं । अब्बू जी को खुदा जन्नत नसीब करे, उन्होंने यह इन्साफ़ नहीं किया । इतनी बड़ी हवेली अकेले भाई १३३

साहब के नाम कर दी ।

सलीम: अब्बू मियाँ ने इतना बड़ा कारख़ाना अकेले मेरे नाम कर दिया, इस पर तो तुम ने कभी एतराज़ नहीं किया । १३४

अम्मी: मैं तो बस यूँ ही कह रही थी कि अगर भाई साहब वापस न आये तो सरकार कब्ज़ा कर लेगी हवेली पर । १३५

सलीम: तो कर ले कब्ज़ा, मैं क्या कर सकता हूँ ? १३६

अम्मी: तो आप उनसे बात क्यों नहीं करते ? बात करके तो देखिये, वह ज़रूर हवेली आप के नाम कर देंगे । १३७

सलीम: कोई मौक़ा देखकर बात करूँगा । १३८

०० दृश्यान्तर । आमिना का कमरा । आमिना पलंग पर लेटी हुई है । बाहर से दस्तक की आवाज़ सुनाई देती है । १३९

काज़िम: मन्नो । १४०

०० आमिना दरवाज़ा खोल देती है । काज़िम अन्दर आता है । १४१

काज़िम: मुझ से ख़फ़ा हो ? १४२

आमिना: मैं क्यों ख़फ़ा होने लगी ? १४३

काज़िम: मन्नो । यक़ीन करो, अब्बा जी आयें चाहे न आयें, मैं बहुत जल्द आ जाऊँगा । तुम्हारे बग़ैर मेरा ज़िन्दा रहना मुश्किल है । १४४

आमिना: तो फिर जा क्यों रहे हैं आप ? १४५

काज़िम: मजबूरी । १४६

आमिना: मुझे क्यों नहीं ले चलते ? १४७

काज़िम: अभी तो हम भी यूँ ही जा रहे हैं । न ठौर न ठिकाना । अब्बा जी कहते हैं कि जब मुझे नौकरी मिल जायेगी तो वह हमारी शादी कर देंगे । १४८

०० आमिना रोने लगती है । १४९

काज़िम: अच्छा देखो, अपना ख़याल रखना, ख़ूब खाना पीना । दुबली न हो जाना । मुझे अलगनी पर लटकाने के लिए बीवी नहीं चाहिये । १५०

०० यह सुनकर आमिना हंस देती है । १५१

०० दृश्यान्तर । सलीम फ़िर्ज़ा बैंक के मैनेजर के कमरे में प्रवेश करते हैं । १५२

बैंक मैनेजर: आइये आइये, आदाब अर्ज़ । आइये, तशरीफ़ रखिये । ... फ़रमाइये । १५३

सलीम: ओह । मैं पूछने आया था ... १५४

बैंक मैनेजर: हूं हूं । १५५

सलीम: मेरे क़र्ज़ का क्या फ़ैसला किया आप ने ? १५६

बैंक मैनेजर: ओ । पिछला ज़माना होता, मिर्ज़ा जी, तो इतना क़र्ज़ मैं अपनी ज़िम्मेदारी पे दे देता । १५७

सलीम: लेकिन हमारे दरमियान ज़माना कैसे आ गया ? आप भी वही, मैं भी वही और हमारा लेन-देन भी कोई नया नहीं है । १५८

बैंक मैनेजर: वो तो ठीक है, लेकिन अपनी ट्रेड की हालत देखिये । कितने जूते वाले रातों-रात पाकिस्तान भाग गये । कितना रुपया डूब गया बैंक का । १५९

सलीम: भागे हैं । उनकी सज़ा उन्हें क्यों दी जाये जो न भागे हैं और जो न भागना चाहते हैं ? १६०

बैंक मैनेजर: मिर्ज़ा जी, ऐसे ऐसे लोग भागे हैं कि बैंक अब किस पर भरोसा करे, किस पर न करे ? १६१

०० टेलीफ़ोन की घंटी बजती है । १६२

बैंक मैनेजर: ०० फ़ोन उठाकर ०० हैलो, हैलो, बोतल ? बोतल कैसी ? जनाब, यह पंजाब नेशनल बैंक की सदर ब्रांच है, शराब की दुकान १६३

नहीं है । ०० वह रिसीवर हुक पर रख देता है । ०० हां मिर्ज़ा जी, हफ़्ते दस दिन में बोर्ड की मीटिंग होने वाली है । आपकी एप्लीकेशन सामने रखूंगा और अपनी तरफ़ से पूरी पूरी कोशिश करूंगा ।

सलीम: अच्छी बात है, आदाब अर्ज़ । १६४

बैंक मैनेजर: आदाब अर्ज़ । १६५

०० दृश्यान्तर । सड़क पर बाकर मिर्ज़ा की फ़ख़रुद्दीन मियां से मुलाक़ात होती है । १६६

फ़ख़रुद्दीन: कैसे हो मियां ? १६७

बाकर: आप ? आप की दुआ है, फूफा जान । १६८

फ़ख़रुद्दीन: बेटी सलमा कैसी है ? १६९

बाकर: वह भी अच्छी है । १७०

फ़ख़रुद्दीन: हमारा नवाब साहब मुन्ना कैसा है ? १७१

बाकर: मुन्ना, अब्बा, आमिना सब ठीक है । अब मैं चलूं ? १७२

फ़ख़रुद्दीन: आ-आ-आ हलीम भाई नज़र नहीं आते । कहीं बाहर गये हैं क्या ? १७३

बाकर: बम्बई गये हैं, वहीं अपनी लीडरी का चक्कर । १७४

फ़ख़रुद्दीन: अल्लाह रहम करे हमारी क़ौम पर । बरख़ुरदार, तुम्हें मालूम है कि हम लोग क्यों तबाह हो रहे हैं ? १७५

बाकर: मैं ये बातें नहीं सोचता, माफ़ कीजिये, मैं इस वक़्त बहुत जल्दी में हूं । ख़ुदा हाफ़िज़ । १७६

फ़ख़रुद्दीन: तो जल्दी में एक बात सुन लो । मुसलमान मुसलमान पे भरोसा नहीं करता, बेटा । १७७

बाकर: यह बात नहीं फूफा जान, आप ... १७८

फ़ख़रुद्दीन: ०० हंसकर ०० देखो ना, सारा शहर जानता है कि हलीम भाई पाकिस्तान चले गये और तुम मुझसे छुपा रहे हो ? अपने हमवतन से, अपने फूफा से, अपने ससुर से । आ-आ, ससुर बाप की तरह होता है, बेटा । १७९

बाकर: बेशक, बेशक । डर यह है बात आम हो गई तो सारी मार्किट पर बुरा असर पड़ेगा । १८०

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा और प्यारेलाल कहीं तेज़ी से जा रहे हैं । १८१

प्यारेलाल : मियां, बैंक वाला तो तैयार नहीं हुआ । अब क्या होगा ? १८२

सलीम: अल्लाह मालिक है । अपना सेठ पूनमचन्द तो है ही । कल उससे जाकर बात करेंगे । १८३

प्यारेलाल: लेकिन वह तो बहुत सूद मांगता है । १८४

सलीम: वक़्त पर काम भी तो आता है । चलो भाई, क़ुफ़्फ़म गली । ०० वे तांगे में बैठते हैं ०० १८५

तांगेवाला: दो रुपये होंगे, दो रुपये । १८६

सलीम: है, यह क्या बात हुई । हम तो हमेशा आठ आने देते हैं । १८७

तांगेवाला: तुम्हारा टाइम ख़त्म हो गया है, मियां । आठ आने में जाना है तो पाकिस्तान जाओ, पाकिस्तान । १८८

प्यारेलाल: वाह वाह वाह वाह । हिन्दुस्तान पाकिस्तान करना है तो तांगा क्यों जोतना हो ? लीडरी करो, लीडरी । १८९

तांगेवाला: चल हट । बड़ा आया है लीडरी कराने वाला । १९०

सलीम: चलो प्यारेलाल । नई-नई आज़ादी मिली है । सब उसका अपने-अपने ढंग से मतलब निकाल रहे हैं । १९१

०० दोनों तांगे से उतर जाते हैं । १९२

०० दृश्यान्तर । पूनमचन्द की बैठक । १९३

फ़ख़रुद्दीन: ०० हंसकर ०० पूनमचन्द जी, आप मेरे मुताल्लिक़ सोचते हैं कि मैं, मैं ... १९४

पूनमचन्द: अजी, केवल तुम्हारी बात नहीं ।...म्हारो बाप भी मुसलमान होवे तो दूर से ही हाथ जोड़ लूंगा । यह पोथी देखो न, कितने मियां भाई सूद ले ले के भाग गये और कितने असल भी । १९५

फ़ख़रुद्दीन: आप फ़िक्र न करें । क़यामत के दिन उन्हें एक-एक पाई का हिसाब देना होगा । १९६

पूनमचन्द: मियां जी, म्हारो कारोबार बहुत छोटो है, फ़क़त तीन तीन महीनों को लेन-देन कर सकूं हूं । जो क़यामत वाली हुंडी म्हारे जस की नहीं । १९७

फ़ख़रुद्दीन: ०० हंसकर ०० ओह, आपने मेरा मतलब ग़लत समझा । १९८

०० सलीम मिर्ज़ा प्रवेश करते हैं । १९९

सलीम: राम राम । ओह । फ़ख़रुद्दीन मियां भी हैं । २००

फ़ख़रुद्दीन: सलाम अलैकुम । २०१

सलीम: वा अलैकुम सलाम । २०२

पूनमचन्द: आओ मिर्ज़ा जी । चाय-वाय मंगवाऊं कुछ ? २०३

सलीम: चाय से कुछ नहीं होगा, सेठ जी । आज लक्ष्मी के दर्शन करवाने होंगे । २०४

पूनमचन्द: हां जी मिर्ज़ा जी । ज़रा हुक्म करो न । २०४

फ़ख़रुद्दीन: क्या बैंक ने आपकी भी दरख़ास्त रद्द कर दी ? २०५

सलीम: हां मियां । बैंक वाले समझते हैं कि मैं रुपया लेकर पाकिस्तान भाग जाऊंगा । २०६

फ़ख़रुद्दीन: लाहौल विलाकुव्वत । आपके बारे में ऐसा कौन सोचता है ? ...दरअसल, सलीम भाई के पाकिस्तान चले जाने की वजह से गड़बड़ हो गई है । २०७

पूनमचन्द: क्या बड़े मिर्ज़ा जी भी चले गये ? २०८

फ़ख़रुद्दीन: अच्छी बात है, अब आप लोग लेन-देन की बातें करेंगे । मैं चलता हूं । सलाम अलैकुम, नमस्ते । २०९

पूनमचन्द: नमस्ते, नमस्ते । २१०

पूनमचन्द: मैं कहा, तांगा बाहर खड़ा है । भेजूं कोरे को ? २११

सलीम: तो क्या आप चाहते हैं कि मैं कुएं के पास से प्यासा चला जाऊं ? २१२

पूनमचन्द: राम, राम । राम, राम । मिर्ज़ा जी, आधी-आधी रात को २१३
थारी सेवा की है, कभी भी लिखाया पढ़ाया भी नहीं । देखिये,
इसकी बार तो भाइयों ने हाथ बांध दिये हैं । इस बार जो
थारी सेवा की तो घर में झगड़ा हो जायेगा ।

सलीम: नहीं नहीं । घर में कोई झगड़ा नहीं होना चाहिये, कम से २१४
कम मेरी वजह से नहीं । ००वह उठकर जाने की तैयारी
करते हैं ०० अच्छा, राम राम, सेठ पूनमचन्द ।

०० दृश्यान्तर । मिर्ज़ा परिवार का आंगन । अम्मी मशीन पर २१५
सिलाई कर रही हैं । मुन्ना दौड़ते हुए अन्दर आता है ।

मुन्ना: दादी अम्मा । दादी अम्मा, दादी अम्मा, ख़त । २१६

अम्मी: इधर ला । अरे, यह तो पाकिस्तान का लगता है । २१७

आपिना: किस का ख़त है अम्मा ? २१८

अम्मी: छोटी बेगम का । २१९

०० तब तक सलमा भी अम्मी के पास आ जाती है । २२०

सलमा: क्या लिखा है बड़ी अम्मा ने ? २२१

अम्मी: लिखती हैं, पाकिस्तान में खाने पीने का बड़ा आराम है । २२२
बारीक चावल, बड़े दाने वाला गेहूं, ताज़ा गोश्त ...

सलमा: यहां तो पता नहीं हराम-हलाल क्या तोल देते हैं बेईमान । २२३

अम्मा: ऐ हैं तो चावल ही कौन-से अच्छे मिलते हैं । पुलाव पकाओ २२४
तो कमबख़्त खिचड़ी लो ।

दादी: अरे । मुझसे क्यों छुपा रही हो, क्या लिखा है छोटी २२५
बेगम ने ?

अम्मा: ऊंई । इसमें छुपाने की क्या बात है । इधर ला । २२६
०० ख़त को दादी के पास ले जाती है ०० अच्छे हैं, वहां
जाकर लीडरी छोड़ देनी पड़ी । सरकार ने आटा पीसने की
चक्की दे दी है । उसको चलाते हैं ।

दादी: झाड़ू फिरे, इतनी बड़ी हवेली, इतना बड़ा कारख़ाना छोड़ २२७
के चक्की पीसने गया है वहां ?

अम्मा: लो, अब इन्हें समझाओ । २२८

सलमा: ददूदा । ताऊ ख़ुद चक्की नहीं पीसते । वह बिजली से २२९
चलती है ।

दादी: तुम्हें बीवी फ़ातिमा का वास्ता, हलीम मिर्ज़ा को लिख २३०
दो कि बिजली-विजली को हाथ नहीं लगाये । जान है
तो जहान है ।

सलमा: लिख दूंगी, ज़रूर लिख दूंगी । २३१

दादी: तुम क्या लिखोगी ? काला अक्षर भैंस बराबर । २३२

आमिना: मैं लिखूंगी, दद्दा । २३३

दादी: छोटी बहू बेगम क्या लिखती हैं ? काज़िम मिर्ज़ा को नौकरी मिली ? २३४

आमिना: हूं हूं, अभी नहीं । २३५

०० दृश्यान्तर । अजमानी साहब सलीम मिर्ज़ा के कारख़ाने में खड़े हैं । २३६

अजमानी: मिर्ज़ा साहब किधर हैं ? २३७

मिस्त्री: ऊपर हैं, हुज़ूर । २३८

०० अज़ान की आवाज़ और साथ ही कारीगरों के काम करने की आवाज़ । अजमानी साहब सीढ़ी चढ़कर ऊपर जाते हैं । २३९

सलीम: ०० उन्हें देखते ही ०० अहा ! आदाब अर्ज़ अजमानी साहब । अच्छा, पानी बरस गया है । चलिये दफ़्तर में चलके बैठते हैं । २४०

अजमानी: ओ हो । हम बैठने को नहीं, यह देखने को आया कि काम कैसा चल रहा है । इधर तो कोई कारीगर ही नज़र नहीं आता ? २४१

प्यारेलाल: ०० हंसकर ०० जी कारीगर तो जुमे की नमाज़ पढ़ने गये हैं, आते ही होंगे । २४२

अजमानी: देखो मिर्ज़ा जी, हम कितने ही व्यापारी को छोड़कर पीछे तुमको आर्डर दिया है और माल टाइम पर मिलना मांगता है । २४३

सलीम: अल्लाह मालिक है, माल वक़्त पर ही मिलेगा । २४४

अजमानी: हमारे को तो नज़र नहीं आता । और हम तो इतना भी सुनता है कि अभुन तलक पैसे का बन्दोबस्त नहीं हुआ और कारीगर भी नहीं मिलता । और जो कारीगर मिलता है वह जुमा पढ़ने चला जाता है, क्यों न ? २४५

सलीम: बाकर मियां दौड़-धूप कर रहे हैं । आप आठ-दस दिन की मोहलत और दे दीजिये । इनशाल्लाह सब ठीक हो जायेगा । २४६

अजमानी: ठीक है । मगर आठ-दस दिन के पीछू भी काम का ऐसे ही हालत रहा तो, माफ़ करना, आर्डर कैंसिल समझो । ०० वह बाहर जाते हैं ०० २४७

सलीम: अजमानी साहब, सुनिये । २४८

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का घर । आमिना मुन्ने की मदद लेकर ऊन के गोले बना रही है । सलमा की अम्मी (अख़्तर बेगम) और उसकी बहन (मोहसिना) प्रवेश करती हैं । २४९

अम्मा: फ़ख़रुद्दीन मियां का ज़नाना आया है । २५०

अख़्तर बेगम: ऐ सलमा । २५१

सलमा: अरे, अम्मा आ गईं । ०० वह गले मिलती है ०० २५२

अख़्तर बेगम: अरे जिओ जिओ । २५३

अम्मी: अरे, अख़्तर बेगम, आओ आओ, आओ । २५४

अख़्तर बेगम: अरे भाभी, आओ । मैंने कहा कि हमारी भाभी तो ग़रीबों के घर आने से रहीं, चलो हमीं हो आयें । २५५

अम्मी: हैं हैं । अरे कैसी बात करती हो । ये घर के झमेड़े दम लेने दें तो सौ बार आऊं तुम्हारे यहां । २५६

अख़्तर बेगम: हां, यह तो है । २५७

०० इसी बीच फ़ख़रुद्दीन मियां आंगन में प्रवेश करते हैं । २५८

अम्मी: अरे फ़ख़रू भाई मियां, आदाब अर्ज़ । २५९

फ़ख़रुद्दीन: सलीम भाई नज़र नहीं आ रहे । हालांकि आज कारख़ाना बन्द है । २६०

अम्मी: दोनों बाप-बेटे कहीं गये हैं, अभी आते ही होंगे । आओ आओ, आओ न । २६१

फ़ख़रुद्दीन: वह, क़र्ज़ों के लिये बेचारे दौड़-धूप कर रहे थे । कुछ हुआ इन्तिज़ाम ? २६२

अम्मी: ये तो मर्दों की बातें हैं । न मैं पूछूं, न वो बतायें । आओ । २६३

०० दृश्यान्तर । शमशाद ऊपर जाने की सीढ़ी के पास खड़ा है । २६४

शमशाद: मुन्ना, ओ मुन्ना कहां हो ? २६५

मुन्ना: शमशाद भाई, मैं यहां बैठा हूं । ०० वह नीचे भागता है ०० २६६

आमिना: मुन्ना । २६७

०० आमिना उसके पीछे दौड़ती है । तब तक शमशाद सीढ़ियां चढ़कर छत तक पहुंच जाता है । वहीं आमिना और शमशाद की मुलाक़ात होती है । २६८

शमशाद: हाय । दिल का रिश्ता भी अजीब रिश्ता है
कच्चे धागे में बांध लिया है तुमने । २६९

आमिना: ऊन बड़ा महंगा होता है शमशाद भाई । २७०

शमशाद: कमाल है । अब हम ऊन से भी गये-गुज़रे हैं । ०० वह मुन्ने को पैसे देते हुए ०० मुन्ना, ये ले । पतंग ले आ । तुम और मैं छत पे पतंग उड़ायेंगे हैं ? जा बेटा, जल्दी ले आ, जा । २७१

आमिना: कोई फ़ायदा नहीं । बिला वजह उसे धूप में दौड़ा रहे हैं आप । २७२

०० दृश्यान्तर । आंगन में सलीम मिर्ज़ा और फ़ख़रुद्दीन मियां चाय पी रहे हैं । २७३

सलीम: तुमने मोहसिना के लिये कोई लड़का देखा ? २७४

फ़ख़रुद्दीन: कहां से देखूं, जनाब ? कोई दस जमातें भी पास कर लेता है तो पाकिस्तान भाग जाता है । २७५

०० आंगन के दूसरे भाग में अख़्तर बेगम और अम्मी बातें कर रही हैं । २७६

अख़्तर बेगम: अरे जिस घर में जाओ, एक दो लड़कियां ज़रूर कुंआरी बैठी मिलेंगी । २७७

अम्मी: अरे मुझसे क्या कहती हो, मेरे सीने पर भी तो एक सिल रखी है । आज ही छोटी बेगम का ख़त आया है कि अब तक नौकरी नहीं मिली काज़िम मिर्ज़ा को । २७८

अख़्तर बेगम: हाय राम । आमिना के लिये लड़कों की कोई कमी नहीं । एक मेरा शमशाद ही है । २७९

अम्मी: अच्छा । २८०

अख़्तर बेगम: अब तो माशाल्लाह दुकान पर भी बैठने लगा है । २८१

०० दृश्यान्तर । छत पर । सीढ़ियों पर बैठी आमिना बुनाई कर रही है । शमशाद उसके पास खड़ा है । २८२

शमशाद: आमिना । २८३

आमिना: जी ? २८४

शमशाद: यह स्वेटर-वेटर किस के लिये बुना जा रहा है ? २८५

आमिना: समझ लीजिये। २८६

शमशाद: ओह । समझ गया । तो यह उनके लिये बुना जा रहा है । २८७

आमिना: आते महीने की क़ब्बीस को उनकी सालगिरह है न ? २८८

शमशाद: सालगिरह ? सालगिरह तो हमारी भी आ रही है । कुछ तोहफ़ा-वोहफ़ा हमें भी मिल जाये ? २८९

आमिना: हूं, ज़रूर मिलेगा । आप कब पैदा हुए थे ? २९०

शमशाद: जिस दिन इश्क़ पैदा हुआ । २९१

आमिना: अच्छा, फ़र्स्ट अप्रैल । २९२

शमशाद: फ़र्स्ट अप्रैल ही सही, लेकिन ऐसी चीज़ देना जिसकी मुझे ज़रूरत है और मेरी ज़रूरत तो तुम, तुम, जानती ही हो । २९३

आमिना: हूं, आईना दूंगी आपको । शमशाद भाई, उर्दू में जितने बुरे शेर कहे गये हैं, सब ... आप ही ने क्यों याद कर लिये हैं ? २९४

०० दृश्यान्तर । चाय पर बैठे सलीम मिर्ज़ा और फ़ख़रुद्दीन मियां । २९५

फ़ख़रुद्दीन: मैं धीरे-धीरे शमशाद को सारा कारोबार सौंप दूंगा और खुद क़ौम की ख़िदमत करूंगा । २९६

सलीम: हमारे लिये जैसा काज़िम वैसा शमशाद, लेकिन मैं भाई साहब को क्या जवाब दूंगा ? २९७

फ़ख़रुद्दीन: जी वोह । २९८

अख़्तर बेगम: ०० वह उठकर चाय की मेज़ के पास आती है ०० सौदा भी बराबर का है । आपने हमारी एक बेटी ली है और एक बेटी दे दीजिये । ख़ैर, मैंने कान में बात डाल दी है, आगे आपकी मर्ज़ी । मोहसिना, सलमा, आओ, चलो न । ०० अम्मी को ०० अच्छा भाभी, ख़ुदा हाफ़िज़ । अच्छा बेटा, जीते रहो । २९९

सलीम: ख़ुदा हाफ़िज़ । ३००

अख़्तर बेगम: ०० सलमा को ०० अच्छा बेटा, जीती रहो । ३०१

फ़ख़रुद्दीन: अरे शमशाद, चलो भी भई । ३०२

०० दृश्यान्तर । अजमानी साहब का दफ़्तर । ३०३

फ़ख़रुद्दीन: क्या बात है, अजमानी साहब नज़र नहीं आ रहे हैं ? ३०४

सेठी: जी । वह दरगाह गये हैं, बस आते ही होंगे । ३०५

फ़ख़रुद्दीन: सलीम चिश्ती साहब की दरगाह ! ओह सुब्हान अल्लाह ! आह, सलाम अलैकुम । ३०६

अजमानी: आइये आइये, आदाब अर्ज़, आदाब अर्ज़, नमस्ते, नमस्ते । ३०७

फ़ख़रुद्दीन: आप दरगाह तशरीफ़ ले गये थे ? ३०८

अजमानी: दरगाह, मन्दिर, गिरजा, गुरुद्वारा, हमारे लिये सब एक बात है । सब जगह मत्था टेकने चला जाता है । ३०९

फ़ख़रुद्दीन: सुब्हान अल्लाह, सुब्हान अल्लाह, मैं भी कुछ इसी अक़ीदे में यक़ीन रखता हूं । ३१०

अजमानी: हम तो कभी वैसा नहीं आप को उधर । ३११

फ़ख़रुद्दीन: हां जी । ०० कुछ घबराकर ०० ओ हो, सलीम भाई, सलीम भाई । ३१२

आवाज़ें: आदाब अर्ज़, आदाब अर्ज़ । ३१३

अजमानी: आइये आइये, मिर्ज़ा साहब, आइये । नमस्ते, नमस्ते । ३१४

माफ़ करना । जगह ज़रा छोटा है, आपको तक्लीफ़ होता होगा ?

प्यारेलाल: इसमें भी कोई तक्लीफ़ हुई भला ।

अजमानी: कस्टोडियन में एप्लीकेशन तो दिया था, पर कोई शुनवाई नहीं । हम तो पैसा भी खर्चने को तैयार है । हकीकत तो यह है कि जब से कराची छूटा है, न ही अच्छा फ़्लैट मिला, न ही अच्छा ऑफ़िस ।

सेठी: कराची में कितना बड़ा दफ़्तर बनवाया था आपने ।

अजमानी: हां, आपने तो देखा ही था ।

सेठी: कोठी भी वैसी ही थी । सब कुछ लुट गया । कितना अन्याय हुआ है हमारे साथ । नेता कहते हैं भूल जाओ। क्या - क्या भूल सकता है कोई ?

अजमानी: भूलना तो पड़ेगा, साईं ।
साथ चलेगी बन्दगी, दुनिया मिट्टी धूल ।
हर दम याद ख़ुदाय की, नानक धन का मूल ।।
सेठी, पिर्ज़ा जी का सैम्पल देखो ।

सेठी: जी । अभी देखा ।

प्यारेलाल: जी साहब, फ़िनिश तो देखिये, बिल्कुल फ़ोरिन माल के

जैसा है ।

अजमानी: वह तो है ही । पर कुछ इन्तिज़ाम भी हुआ ?

सलीम: वह भी हो जायेगा । बस, दो चार दिन और चाहिएं ।

अजमानी: अब तक नहीं हुआ तो अब दो चार दिन में क्या होगा ?

सलीम: आप सही फ़रमाते हैं । मेरे लिये कुछ करना मुश्किल है, लेकिन उसके लिये तो कुछ भी मुश्किल नहीं ।

अजमानी: उसके लिये तो कुछ मुश्किल नहीं, पर आपने भी तो कुछ इन्तिज़ाम किया होगा ?

सलीम: क्या बताऊं, क्या इन्तिज़ाम किया है ।

प्यारेलाल: पिर्ज़ा जी के लिये यह बताना मुश्किल है कि हवेली रहन रख रहे हैं ।

फ़ख़रुद्दीन: जायदाद होती किस लिये है ? हवेली तो हलीम भाई के नाम है न ?

प्यारेलाल: जी । इसीलिये तो हम आपसे चार दिन की मोहलत और मांग रहे हैं । आज तारीख़ क्या है ?

आवाज़: ग्यारह ।

प्यायेलाल: चौदह को हलीम भाई आ जावेंगे । ३३३

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का आंगन । आमिना ख़त पढ़कर रो रही है । ३३४

अम्मा: मैं पहले ही जानती थी कि न भाई साहब आयेंगे, न काज़िम को भेजेंगे । उन की बला से कोई मरे या जिये । ३३५

दादी: क्या लिखा है उस जोरू के गुलाम ने ? ३३६

सलमा: लिखा है मैं वहां आऊंगा तो गिरफ़्तार हो जाऊंगा । ३३७

दादी: क्यों ? क्या किसी की चोरी की है ? ३३८

सलमा: कई जगह फ़साद कराने के इल्ज़ाम हैं उनके सर पर । ३३९

दादी: वह तो जनम का ही फ़सादी है । जितना सलीम नेक, उतना ही वह बद । तुम आमिना को लेकर चली क्यों नहीं जातीं ? रो रो के आंखें फोड़ लेगी कुतिया । ३४०

अम्मा: फ़ायदा क्या ? काज़िम मिर्ज़ा तो विलायत जा रहे हैं । ३४१

दादी: जहन्नुम में जाये । जैसा बाप, वैसा बेटा । ३४२

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा और बाकर मिर्ज़ा कारख़ाने की ओर जा रहे हैं । ३४३

सलीम: एक तो बात करने का मौक़ा न मिला, दूसरे मुझे यक़ीन था कि भाई साहब लौट आयेंगे । ३४४

बाकर: कमाल है । घर का एक एक बच्चा जानता है वह नहीं लौटेंगे । अम्मा ने भी तो आपसे कहा, लेकिन आप न जाने किस ज़माने की बातें करते हैं; किस दुनिया में रहते हैं । ३४५

सलीम: भाई साहब हवेली उठा नहीं ले गये, हमारा ही क़ब्ज़ा है उसपर । हमीं रह रहे हैं उसमें । ३४६

बाकर: कितने दिन रह सकेंगे आप ? आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, कस्टोडियन का क़ब्ज़ा हो ही जायेगा । ३४७

सलीम: यह बात तुम सोच सकते हो, कह सकते हो । मैं न सोच सकता हूं, न कह सकता हूं । मुझे ख़ुदा पर भरोसा है । इंशाअल्लाह सब ठीक हो जायेगा । ३४८

बाकर: सब ठीक हो जायेगा, ठीक हो जायेगा; ख़ुदा के लिये, यह गदर्न बन्द कीजिये आप । आज मार्किट में चार पैसे का क्रेडिट नहीं मिलता आपको । कोई लोन नहीं देता । इतना बड़ा आर्डर मिला है, वह कैंसिल होनेवाला है और अब तो यह बाक़ी है कि यह कारख़ाना बन्द हो जाये और हम सब भीख का ठीकरा लेकर बैठें सलीम चिश्ती की दरगाह पर । ३४९

कारीगर: बाप बेटे में ऐसा झगड़ा पहले कभी नहीं हुआ था । ३५०

शकूर: अरे भाई मेरे, यह झगड़ा हुआ क्यों, यह भी मालूम है ? ३५१

कारीगर: क्यों ? ३५२

शकूर: क्या बतायें ? काम तो सब ठप हो ही गया है और वैसे, अब यह हवेली भी बिकने वाली है । ३५३

कारीगर: फिर तो मियां को भी पाकिस्तान चला जाना चाहिये । ३५४

०० सलीम मिर्ज़ा कारख़ाने की सीढ़ियों से उतर रहे हैं । यह बातचीत सुनकर रुक जाते हैं । ३५५

शकूर: अबे, यह सब इसी की तैयारी है । ३५६

कारीगर: अच्छा । ३५७

शकूर: ०० सलीम मिर्ज़ा को देखकर ०० अजी यह सब कहें, मैं थोड़े ही कहूं ।
०० कारीगर से ०० अबे, यह क्या कर दिया है ? ३५८

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का घर । अम्मा मशीन चला रही हैं । ३५९

आमिना: अम्मा, अब्बू बहुत परेशान लगते हैं । ३६०

अम्मा: तो मैं क्या करूं, परेशानी उन्होंने ख़ुद मोल ली है । ३६१

०० सलीम मिर्ज़ा के अलावा बाक़ी परिवार के लोग खाने पर बैठे हैं । ३६२

सिकन्दर: अब्बू कहते हैं वह नहीं आयेंगे । उन्हें अब भूख ही नहीं । ३६३

अम्मा: ऊंह । नहीं आते तो न आयें । ३६४

नौकरानी: दोपहर को भी मियां ने कुछ नहीं खाया । नाश्तेदान बन्द का बन्द वापस आ गया है । ३६५

बाकर: आमिना जाये तो वह अभी आ जायें । ३६६

आमिना: मैं नहीं जाती, मुझे तो डर लगता है । आप जाइये न बाकर भाई । ३६७

बाकर: अम्मा, अम्मा, आप जाइये न । मुझसे तो वैसे ही ख़फ़ा हैं । ३६८

अम्मा: तौबा है । बच्चों को मनाना आसान है । बूढ़ों को मनाना मुश्किल । ३६९

दादी: ये क्या चुपके चुपके मेरी बुराइयां हो रही हैं ? ३७०
०० सभी हँसने लगते हैं ००

अम्मा: लो समझाओ । ०० अन्दर जाती हैं ०० अब उठिये भी, ३७१

खाना ठंडा हो रहा है ।

सलीम: तुम लोग खा लो । मुझे भूख नहीं । ३७२

अम्मा: ऐसा कौन-सा गुनाह कर दिया है बाकर मिर्ज़ा ने, ३७३
जो आप अटपाटी-सटपाटी लेकर पड़ रहे हैं ?

सलीम: सब गुनाह मेरे ही किये हुए हैं, सब परेशानी मेरी ही वजह ३७४
से है, मैंने भाई साहब से हवेली जो नहीं लिखवाई ।

अम्मा: तो क्या उसने ग़लत कहा ? ३७५

सलीम: उसने ग़लत नहीं कहा तो फिर उसके पास जाओ । मेरे पास ३७६
क्यों आती हो ? उसको खिलाओ, मैं नहीं खाऊंगा ।

अम्मा: न खाओ । ०० कहकर गुस्से में चली जाती है ०० ३७७
अब नहीं आते तो मैं क्या करूं ? तुम लोग खाओ ।

०० आमिना सलीम मिर्ज़ा के कमरे में जाती है । ३७८

आमिना: ०० धीमी आवाज़ में ०० अब्बू जी, उठिये न । ३७९

सलीम: तू क्यों आई है ? जा, जा, मुझे सोने दे । ३८०

आमिना: अब उठिये भी, खाइये न । ३८१

सलीम: मैंने कह जो दिया मैं नहीं खाऊंगा । ३८२

आमिना: छुपा के लाई हूं । ३८३

सलीम: क्या है ? ३८४

आमिना: ०० कौर उठाकर ०० हूं हूं यह । ३८५

सलीम: मैं नहीं खाऊंगा । ३८६

आमिना: खाइये न । ३८७

सलीम: ऐ चुड़ैल । दरवाज़ा तो बन्द कर पहले । ३८८

सलीम: ये अल्लाह । ०० खाने बैठ जाता है और जल्दी जल्दी ३८९
सब खा लेता है ००

आमिना: भूख लगी थी न ? ३९०

०० दृश्यान्तर । दोपहर का वक़्त । सलीम मिर्ज़ा लेटे हुए ३९१
हैं । आमिना दवाई कूट रही है ।

दादी: यह कोई चाय है ? ठंडी बर्फ़ । ३९२

आमिना: सर्दी जो इतनी है । ३९३

दादी: सर्दी कहां । सर्दी तो उस साल थी जब मेरी शादी हुई थी । ३९४

आमिना: दद्दा, आप को अपनी शादी की सभी बातें याद हैं ? ३९५

दादी: कहां याद है जब मैं छोटी-सी थी । कूट लिया ? ३९६

आमिना: हां । ३९७

दादी: हमारे ज़माने में शादी जल्दी कर दिया करते थे । आजकल की तरह नहीं, जब मुंह पर झुर्रियां पड़ें तब जाकर सेहरा बंधे । ३९८

०० दृश्यान्तर । सलमा और बाकर मियां अपने कमरे से बाहर आते हैं । सलमा बाकर का कोट ब्रुश से झाड़ रही है । ३९९

बाकर: बस भी करो । अब्बू जी बाहर बैठे हैं । ४००
०० बाहर आकर ०० अब्बू जी, अभी आप कारख़ाने चलेंगे ?

सलीम: मैं बाद में आ जाऊंगा । ४०१

बाकर: मैं तांगा भिजवा दूं ? ४०२

सलीम: मियां, मैं पैदल आ जाऊंगा । ४०३

०० बाकर मिर्ज़ा बाहर निकलने लगता है । इतने में सिकन्दर अन्दर आता है । ४०४

सिकन्दर: यह समन्ज़ आया है । ४०५

बाकर: क्या ? ४०६

बाकर: देखिये । कस्टोडियन का नोटिस आ गया । अब हवेली ख़ाली करनी पड़ेगी । ०० धीमी आवाज़ में ०० दस्तख़त कीजिये । ४०७

दादी: मैं भी सुनूं ? मुझे भी तो बताओ । यह मुआ कौन मेरी हवेली ख़ाली कराने आया है ? ४०८

बाकर: कस्टोडियन । ४०९

दादी: मैंने तो दो ही बेटी जने थे । यह तीसरा हक़दार कौन निकल आया ? ४१०

बाकर: जब सोचने का वक़्त था तब तो सोचा नहीं । अब क्या सोच रहे हैं आप ? दस्तख़त कीजिये । ४११

दादी: ख़बरदार सलीम, कुछ लिखना-विखना नहीं । मैं देख लूंगी सब को । ४१२

सलीम: अम्मा, तुम्हारा राज इस आंगन तक है, बाहर नहीं । ०० वह काग़ज़ों पर दस्तख़त कर देते हैं ०० ४१३

बाकर: ०० व्यंग्य से ०० इंशाअल्लाह सब ठीक हो जायेगा । ४१४

अम्मा: अब होगा क्या ? हम कहां जायेंगे ? कहां सर छुपाने की जगह मिलेगी ? ०० वह रोने लगती है ०० ४१५

00 दृश्यान्तर । अजमानी साहब का दफ़्तर । ४१६

सेठी: एक,दो नहीं, सैकड़ों दरख़्वास्तें है । दरख़्वास्तों के साथ ये बड़ी-बड़ी सिफ़ारिशें, लेकिन पत्ते सारे मेरे हाथ । मैंने भी वह चाल चली है कि हमारी दरख़्वास्त सब से ऊपर । ४१७

अजमानी: कितने पैसे लोगे ? ४१८

सेठी: इस वक़्त यही कोई आप दो-ढाई हज़ार रुपये ख़र्च कर दें तो हवेली आपकी । ४१९

अजमानी: दो-अढ़ाई हज़ार का कोई बड़ा बात नहीं, लेकिन यह, सलीम मिर्ज़ा की हवेली लेना कुछ ठीक नहीं लगता । ४२०

सेठी: उनकी हवेली कैसी ? वह तो कस्टोडियन के अन्दर है । आपको तो कस्टोडियन से मिलेगी । फिर भी आपकी मर्ज़ी न हो तो वह रतनलाल, रतनलाल को मिल जायेगी, जिन्होंने इसके बारे में कस्टोडियन को इत्तिला दी थी । ४२१

अजमानी: हवेली ख़ाली हो गई ? ४२२

सेठी: थोड़ा समय मांगा है । कहते है, मकान ढूंढ़ रहे है । ४२३

00 दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा जगह-जगह मकान की तलाश में भटक रहे है । ४२४

मकान मालिक: अच्छा, आप को घर चाहिये ? ४२५

सलीम: जी । ४२६

मकान मालिक: आप का शुभनाम ? ४२७

सलीम: सलीम मिर्ज़ा । ४२८

मकान मालिक: बात यह है कि आप ज़रा लेट आये हैं । इस घर की बात तो पक्की हो चुकी है । ४२९

00 दूसरा मकान । ४३०

मकान मालिक: मिर्ज़ा जी, आप मुझे ग़लत मत समझियेगा । दरअसल यह हिन्दू - मुसलमान का सवाल नहीं । मैं किसी ऐसे किरायेदार को नहीं रख सकता जो मांस - मछली खाता हो । मेरी मजबूरी समझे आप ? ४३१

00 अब मिर्ज़ा साहब एक तीसरे मकान के अन्दर जाते हैं । ४३२

सलीम: सुना है आपका कोई मकान किराये पर ख़ाली हो रहा है ? ४३३

मकान मालिक: जी हां । आप देखना चाहते हैं ? ४३४

सलीम: यह तो बाद में हो जायेगा । पहले आप सुन लीजिये । ४३५

मकान मालिक: जी । ४३६

सलीम: मकान मुझे चाहिये । मेरा नाम सलीम मिर्ज़ा है । मैं मुसलमान हूं । क्या अब भी देख सकता हूं ? ४३७

मकान मालिक: शौक़ से, शौक़ से । ०० हंसकर ०० देखिये मिर्ज़ा जी, मुझे किराये से मतलब है, आपके धरम से नहीं । ४३८

सलीम: जब से मकान ढूंढ रहा हूं यह बात सुनने के लिए मेरे कान तरस रहे हैं । ४३९

मकान मालिक: ०० हंसता है ०० अगर आप साल के साल पेशगी किराया देना पसन्द करें तो आज ही चाभी ले लीजिये । ४४०

सलीम: साल का किराया पेशगी, यह तो कोई क़ायदा नहीं । ४४१

मकान मालिक: मुझे मालूम है, लेकिन आप ही की बिरादरी के साहब सात महीने का किराया ले के पाकिस्तान चले गये । ४४२

सलीम: देखिये, साल का किराया पेशगी देना तो मुश्किल है, लेकिन तीन-तीन महीने का पेशगी दे सकता हूं । ४४३

मकान मालिक: चलिये, आप की ही बात रही । ४४४

सलीम: अच्छी बात है । ४४५

०० दृश्यान्तर । मिर्ज़ा साहब का मकान । घर छोड़ने की तैयारी हो रही है । आमिना अपना सामान बन्द कर रही है । शमशाद उसे छेड़ता है । ४४६

शमशाद: यह लीजिये । ४४७

आमिना: क्या सता रहे हो शमशाद भाई ? ४४८

शमशाद: हाय! फ़रिश्ते को तो तौबा करनी पड़ेगी जो इस भोले चेहरे पर ग़ुस्सा देखेगा । ४४९

आमिना: फ़रिश्ते की याद न दिलाइये । वह इस वक़्त इतना दूर है, शैतान जितना क़रीब । ४५०

शमशाद: अच्छा जी, तो क़ाज़िम मिर्ज़ा फ़रिश्ते और हम शैतान ? ०० शमशाद को चिट्ठियों की पोटली नज़र आती है ०० वह अलग बांध के रखा था जो माल अच्छा है । ४५१

आमिना: शमशाद भाई, दे दीजिये । नहीं, नहीं, क्यों परेशान कर रहे हैं ? ४५२

शमशाद: नहीं । ४५३

आमिना: दे दीजिये मुझे । ओह । ४५४

शमशाद: ऐ छू छू । ४५५

आमिना: कैसे आदमी हैं आप ? हम घर से निकाले जा रहे हैं । आपको मज़ाक़ ही सूझ रहा है । ४५६

शमशाद: शैतान जो ठहरा । पहले फ़रिश्ते के सारे ख़त पढ़ूंगा, फिर ४५७

हूंगा । " मेरी जां, कुछ देर सांस के बग़ैर तो ज़िन्दा रह सकता हूं, तुम्हारे बग़ैर एक पल नहीं" ... हाय !

आमिना: आप को मेरी क़सम जो एक हर्फ़ भी पढ़ें । ४५८

शमशाद: चलो, नहीं पढ़ता । तुम ज़िन्दगी इनके साथ गुज़ारना चाहती हो या, या मेरे साथ ? ४५९

आमिना: अकेले । ४६०

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा की हवेली । बुलहा तोड़कर अम्मा रोती हैं । ४६१

फ़ख़रुद्दीन: सलाम अलेकुम । ४६२

सलीम: व अलेकुम सलाम, फ़ख़रू मियां । ४६३

०० फ़ख़रुद्दीन ने शादी के कपड़े डाले हुए हैं । ४६४

फ़ख़रुद्दीन: यह पोशाक ? सलीम भाई, अब मैं कांग्रेस में शामिल हो गया हूं । ४६५

सलीम: मियां, तुम तो पक्के लीगी थे । ४६६

फ़ख़रुद्दीन: सलीम भाई, आहिस्ता । अब लीगियों के लिये सिर्फ़ दो रास्ते रह गये हैं । पाकिस्तान चले जायें या कांग्रेस में । ४६७

वैसे कांग्रेस में शामिल होने के बहुत-से फ़ायदे हैं ।
क़ौम की ख़िदमत होती है । ०० हंसकर ००
आपकी दुआ से मैं मुहल्ले कमेटी का सदर हो गया हूं ।
अगर आप चाहें तो हवेली का मामला मुख मन्त्री तक ले जाऊं ।

सलीम: एक हवेली का मामला कहां तक पहुंचाओगे मियां ? मैंने तो अपना हर मामला ख़ुदा पर छोड़ दिया है, उसी पर । ४६८

सलीम: ०० अपनी बीवी से ०० अम्मा जान कहां हैं ? ४६९

अम्मा: अरे, उन्हें तो भूल ही गये । जा, आमिना, अन्दर देख । ४७०

आमिना: ददा, ददा न जाने कहां चली गईं । ४७१

सलीम: मिल गईं, आमिना ? ४७२

आमिना: नहीं हैं । ४७३

बाकर: अब्बू जी, मैं यहां देख लेता हूं । ४७४

आमिना: ददा । ओ हो, क्या मतलब? कहां चली गईं ? दादी अम्मा । ४७५

सलीम: बाकर मियां । ४७६

बाकर: जी, यहां भी नहीं हैं । ४७७

सलीम: नहीं है, ओ हो ! ४७८

आमिना: यहां भी नहीं है । ४७९
०० वह लकड़ियों के ढेर के पीछे जा पहुंचती है । वहीं
कोने में दादी अम्मां दुबकी हुई दिखाई देती है । ००
अरे चलिये । आप यहां बैठी हैं, चलिये ।

दादी: मैं नहीं जाऊंगी । तुम लोग दफ़ा हो । तुम लोग जाओ । ४८०

आमिना: अब्बू जी, यहां बैठी हैं लकड़ी वाली कोठरी में । ४८१

सलीम: लकड़ी वाली कोठरी में । ४८२

आमिना: चलिये न, उठिये । ४८३

दादी: मैं नहीं जाऊंगी । तुम लोग जाओ । ४८४

आमिना: ०० अब्बू को देखकर ०० यह देखिये, यहां बैठी है । ४८५

सलीम: अम्मा जान, चलिये । ४८६

दादी: मैं नहीं जाऊंगी, अपनी हवेली छोड़ के नहीं जाऊंगी । ४८७

सलीम: अब यह हवेली हमारी नहीं है । ४८८

दादी: है । हमारी है । हमारी है । यह हवेली हमारी है । ४८९

सलीम: अम्मा जान, ज़िद न करो । बाकर मियां ! ४९०

बाकर: जी अब्बू जी । चलिये दादी अम्मा, चलिये, चलिये । ४९१
उठिये, चलिये, चलिये । चलिये, दद्दा, चलिये ।

सलीम: उठा लो इन्हें । ४९२

बाकर: चलिये, खड़ी हो जाइये । आइये, आइये । ४९३

सलीम: उठा लो, उठा लो । ४९४

दादी: हाय ! क्यों सता रहा है मुझे ? मुझे यहीं ४९५
छोड़ दे, मुझे यहीं मरने दे । यहां से मत ले जा ।
मुझे यहीं रहने दे ।

बाकर: कैसी बच्चों जैसी बातें करती हैं आप भी । आप को ४९६
अकेले छोड़ कर हम कैसे जा सकते हैं ?

दादी: मुझे यहां छोड़ दे, छोड़ दे, छोड़ दे । मेरी मिट्टी ४९७
पलीद मत कर । क़यामत के दिन मैं क्या जवाब दूंगी
उनको ? छोड़ दे, छोड़ दे मुझे । छोड़ दे ।

०० सभी उन को ज़बर्दस्ती उठाकर ले जाते हैं । दृश्यान्तर । ४९८
सलीम मिर्ज़ा का परिवार नये मकान पर पहुंचता है ।

अम्मा: ऐ है, निगोड़े तीन ही तो कमरे हैं । अब आमिना को ४९९

कौन-सा कमरा दूंगी ? सिकन्दर भी इसके साथ ही रहेगा । ५००

आमिना: मैं नहीं रखूंगी इसको अपने साथ । सफ़ाई करते-करते नाक में दम आ जायेगा । ५०१

सिकन्दर: अरे वाह ! वाह ! ५०२

सलीम: वह कहां रहेगा, बेटी ? कमरे कम हैं । ५०३

सिकन्दर: कमरे कम नहीं, अब्बू, यहां ज़्यादा हैं । ५०४

आमिना: मारूंगी । ५०५

०० आमिना और सिकन्दर आपस में हाथापाई करने लगते हैं । ५०६

बाकर: अरे अरे, क्या ऊधम मचा रखा है ? पहले क्या कम परेशानी है । ५०७

सलीम: अम्मा जान की चारपाई कहां बिछवाई है ? ५०८

अम्मा: ऊपर । ५०९

सलीम: ऊपर ? सीढ़ियां चढ़ने उतरने में उन्हें तकलीफ़ न होगी ? ५१०

सलमा: दादी अम्मा ने ज़िद करके अपनी चारपाई वहां बिछवाई । जंगले से हवेली जो नज़र आती है । ५११

०० दृश्यान्तर । जूतों का बाज़ार । ५१२

व्यापारी: कहिये, क्या सेवा करूं ? ५१३

बाकर: वसूली के लिए आया था । माल दिये हुए एक हफ़्ता हो गया । ५१४

व्यापारी: हफ़्ते की बात छोड़िये । रामलाल, रतनलाल, चुन्नीलाल, सब एक महीने की क्रेडित देते हैं । ५१५

बाकर: जी । ५१६

व्यापारी: सुन्दरलाल, मिर्ज़ा जी का माल वापस करो । ५१७

बाकर: माल रहने दीजिये साहब ॥ आख़िर हमें भी तो मार्किट में रहना है । हवा का रुख़ देखकर चलना पड़ेगा । लेकिन, हमारे यहां की कारीगरी आपको और कहीं नहीं मिलेगी साहब, हां । ५१८

व्यापारी: अब तक मार्किट नवाबों के हाथ में थी । अब व्यापारियों के हाथ में है । कारीगरी को कौन देखता है ? शो चाहिये, शो । ५१९

बाकर: जी । ५२०

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का घर । सलमा गहने उतार ५२१

रही है ।

सलमा: ०० अंगूठी पकड़े हुए ०० यह भी उतार दूं ? ५२२

बाकर: हां, हां, यह भी उतार दो । अंगूठी न पहनोगी तो कौन-सी बेवा हो जाओगी ? ५२३

सलमा: अल्लाह न करे । कैसी बातें कर रहे हैं आप ? ५२४

बाकर: अम्मा, अम्मा, आपके पास जितने ज़ेवर हैं, ज़रा दे दीजिये न । ५२५

अम्मा: मियां, मेरे पास कौन-से ज़ेवर रखे हैं ? कुछ बहू को पहना दिये, कुछ आमिना के लिये उठा रखे हैं । ५२६

बाकर: सलमा के पास जितने थे, वह मैं ले आया हूं । ५२७

अम्मा: क्यों मियां, क्यों ? ख़ैरियत तो है ? ५२८

बाकर: अम्मा, अम्मा, कारख़ाने की हालत बहुत बुरी है । ५२९

अम्मा: वाह मियां, वाह! कारख़ाना चलाने के लिये बहू-बेटियों के ज़ेवर बेचोगे ? ५३०

बाकर: कारख़ाना चला तो बेहतर ज़ेवर बन जायेंगे, अम्मा । ५३१

सलीम: ०० ऊपर से ०० मियां, कारख़ाना जैसे चल रहा है, ५३२

चलने दो ।

बाकर: चल कहां रहा है ? घिसट रहा है । ५३३

सलीम: तो घिसटने दो । दूसरों की देखा-देखी हम अपने तौर-तरीक़े नहीं बदल सकते । पूरी की हवस में आधी भी चली जायेगी । ५३४

बाकर: मुझे पता नहीं आप लोग तबदीली से इतना घबराते क्यों है ? ५३५

सलीम: इसकी ज़रूरत ही क्या है ? जिसने रिज़्क़ देने का वायदा किया है, हर हालत में देगा । बहू के ज़ेवर वापस कर दो । ५३६

बाकर: आप को क्या मालूम मार्किट में क्या हो रहा है, कौन क्या कर रहा है ? कुछ समझते ही नहीं ।
०० सलमा से ०० ये लो । ५३७

०० दृश्यान्तर । काज़िम मिर्ज़ा बैग लटकाये सलीम मिर्ज़ा की पुरानी हवेली पर आता है । अन्दर रतनलाल अजमानी साहब से विदा ले रहे हैं । ५३८

रतनलाल: भई अजमानी साहब, मैं यह कह रहा था कि इस धन्धे का सुधारना बहुत ज़रूरी है । ५३९

अजमानी: अरे, हम सुधार के ख़िलाफ़ नहीं, पर इन जूतेवालों को ५४०

इकट्ठा करना बहुत मुश्किल है ।

रतनलाल: मार्किट संगठित होगी । होंगे कैसे नहीं ? अजी, आप मेरे ५४१
सुझाव पर विचार तो कीजिये । ... अच्छा, अजमानी
साहब, अब चलते हैं ।

अजमानी: अच्छा । 00 वह उठकर दरवाज़े की ओर आते हैं 00 ५४२

रतनलाल: अरे अरे, आप क्यों कष्ट कर रहे हैं ? मैं चला । ५४३

अजमानी: नहीं, नहीं, कोई बात नहीं । ५४४

रतनलाल: नमस्ते । ५४५

अजमानी: नमस्ते । ५४६

00 रतनलाल काज़िम मिर्ज़ा को देखकर रुक जाता है । ५४७

काज़िम: अस्सलाम अलैकुम । ५४८

रतनलाल: नमस्कार । ५४९

काज़िम: जी, सलीम मिर्ज़ा साहब की हवेली यही है न ? ५५०

रतनलाल: नहीं । वह अब यहां नहीं रहते । कहां से आ रहे हो ? ५५१

काज़िम: जी, सहारनपुर से । मैं उनका रिश्तेदार हूं । ५५२

अजमानी: चौकीदार ! ५५३

चौकीदार: जी हुज़ूर । ५५४

अजमानी: भई, इन्हें मिर्ज़ा जी के घर पहुंचा दो । ५५५

चौकीदार: बहुत अच्छा, सरकार । ५५६

काज़िम: बहुत-बहुत शुक्रिया । नमस्ते । ५५७

रतनलाल: अजमानी साहब । ५५८

अजमानी: हूं । ५५९

रतनलाल: यह हलीम मिर्ज़ा का लड़का है न ? ५६०

अजमानी: देखा नहीं, भई, ठीक तरह । ५६१

रतनलाल: मुझे वही लगा । अच्छा, नमस्ते । ५६२

अजमानी: अच्छा, नमस्ते । ५६३

00 दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का मकान । ५६४

नौकरानी: अरे, काज़िम मियां ? कब आये ? बेगम साहिबा, काज़िम ५६५
मियां आये हैं ।

बाकर: काज़िम, काज़िम मियां! अरे भई, भई ख़ूब आये तुम । ५६६
कोई आने की ख़बर नहीं, कुछ भी नहीं ।

काज़िम: ०० सलमा को देखकर ०० आदाब अर्ज़ । ५६७

सलमा: आदाब अर्ज़ । ५६८

बाकर: ताये अब्बा कैसे हैं ? ५६९

अम्मा: हूं, काज़िम मियां । अरे काज़िम, अरे तुम कैसे आ गये ? ५७०
आमिना, ऊपर खड़ी-खड़ी क्या देख रही है ? नीचे आओ ।

सिकन्दर: आदाब अर्ज़, काज़िम मियां । ५७१

काज़िम: हैलो, सिकन्दर । ५७२

सलीम: मां-बाप की इजाज़त से आये हो न ? ५७३

बाकर: क्यों, क्या बात है ? ५७४

काज़िम: कुछ नहीं । ५७५

दादी: कौन है ? काज़िम ? ५७६

काज़िम: मैं ज़रा दादी अम्मा से मिल आऊं । ५७७

बाकर: हां, हां, हां ज़रूर । ५७८

काज़िम: कहां ? ५७९

सिकन्दर: इधर से ऊपर जाइये । ५८०

काज़िम: सलाम अलेकुम । ५८१

दादी: आया था तो हलीम मिर्ज़ा को भी साथ ले आता । और ५८२
देखती कि नींद आती उसे, यहीं सुलाती इस पिंजरे में ।

सिकन्दर: आप इस वक़्त उन्हें सलाम करने न जाते तो अच्छा होता, ५८३
अब रात भर नहीं सोयेंगी ।

काज़िम: सलाम चची जान । ५८४

अम्मा: जीते रहो । वहां सब ख़ैरियत है न ? छोटी बेगम, ५८५
भाई साहब, सब अच्छे हैं न ?

सलीम: कोई नौकरी मिली ? ५८६

काज़िम: जी ... पाकिस्तान गवर्मेंट मुझे कैनेडा भेज रही है । ५८७
वज़ीफ़ा भी दिया है । आठ-दस रोज़ में जहाज़ जाने
वाला है ...सोचा, जाने से पहले वह ...

सलीम: अच्छा, अच्छा, बहुत अच्छा । ५८८

00 अम्मा हंसती है । ५८६

सलीम: थाने में रिपोर्ट लिखवा दी न अपने आने की ? ५९०

काज़िम: क्या रिपोर्ट लिखवाना ज़रूरी है ? ५९१

सलीम: हां, हां, बहुत ज़रूरी है । ५९२

अम्मा: अच्छा, अच्छा, अब नीचे जाओ । मुंह-हाथ धो, खाना खाओ और आराम करो । ५९३

सलीम: बेटा, सवेरे जाकर रिपोर्ट लिखवा देना, याद से । ५९४

00 काज़िम आमिना के कमरे की ओर जाता है । नीचे की बातचीत साफ़ सुनाई देती है । ५९५

बाकर: अम्मा ठीक ही कहती हैं । शादी कर ही दीजिये न । ५९६

सलीम: मेरे ख़याल में तो भाई साहब को भी यही मंज़ूर होगा । ५९७

अम्मा: बिल्कुल, वरना बेटे को भेजते ही क्यों ? ५९८

काज़िम: 00 आमिना के दरवाज़े पर 00 मन्नो, मन्नो । ५९९

आमिना: क्या है ? ६००

काज़िम: मन्नो, बस अब हम कभी जुदा न होंगे । ६०१

आमिना: कुछ दिन के लिये भी नहीं । ६०२

काज़िम: एक दिन के लिये भी नहीं । ६०३

आमिना: एक पल के लिये भी नहीं । ६०४

काज़िम: मैं तुम्हें अपने सीने में छुपा लूंगा । ६०५

आमिना: छुपा लो । ६०६

00 नीचे से आवाज़ें सुनाई देती हैं । ६०७

अम्मा: क्या सोच रहे हैं ? ऐसा मौक़ा फिर नहीं मिलने का । ६०८

सलीम: बड़े भाई साहब को भी ख़त लिखकर पूछ लेते तो अच्छा रहता । ६०९

बाकर: इसकी क्या ज़रूरत है ? ताये अब्बा को इस बात से कभी इन्कार न था और न अभी होगा । ६१०

सलीम: हां, और हमें भी कौन-सी धूमधाम करनी है ? चन्द क़रीबी रिश्तेदारों को बुला लेंगे । ६११

अम्मा: हां, और क्या ? ६१२

00 काज़िम आमिना के पास बैठता है । ६१३

आमिना: आह -- ६१४

काज़िम: शादी होते ही सब की ज़बान बन्द हो जायेगी । ६१५

आमिना: हूं, तो क्या ताये अब्बा ख़िलाफ़ हैं हमारी शादी के ? ६१६

काज़िम: ख़िलाफ़ तो नहीं हैं, लेकिन हर काम में फ़ायदा देखने की आदत है उनकी । एक डिपटी मिनिस्टर से दोस्ती हो गई है । चाहते हैं कि मेरी शादी उनकी बेटी से हो जाये । ६१७

आमिना: तो कर क्यों नहीं लेते शादी ? ६१८

काज़िम: शादी ही तो करने आया हूं, भाग के । ६१९

00 आमिना काज़िम से लिपट जाती है । ६२०

00 दृश्यान्तर । आंगन में शादी के गीत गाये जा रहे हैं । ६२१

मोहसिना: बेगम साहिबा, पहले मेरा नेग कीजिये । ६२२

अम्मा: हां, हां, पहले मोहसिना को तो दे लूं । ६२३

मोहसिना: इक्कीस रुपये से कम नहीं लूंगी । आमिना की शादी है, हां । ६२४

अख़्तर: ऐ ज़िद नहीं करते । ६२५

अम्मा: ऐ है, यह तो उसका हक़ है । लो, जीती रहो, तुम भी माइयों बैठो, डोली चढ़ो । ६२६

अख़्तर: हां, हां । ६२७

अम्मा: ले मोहसिना, यह तेरा है । ६२८
ले, तू भी ले ।

00 इतने में दरवाज़े पर दस्तक होती है । ६२९

इंस्पेक्टर: आप का भतीजा काज़िम मिर्ज़ा जो पाकिस्तान से यहां आया है, आप ही के यहां ठहरा है ? ६३०

सलीम: यहां नहीं तो और कहां ठहरेगा ? ६३१

इंस्पेक्टर: ज़रा बुलाइये उन्हें । ६३२

सलीम: क्या बात है, इंस्पेक्टर साहब ? चार दिन में उसकी मेरी बेटी से शादी है । वह शादी करने आया है । ....यह है काज़िम मिर्ज़ा । पूछ लीजिये जो पूछना है । ६३३

इंस्पेक्टर: जी, पूछ-ताछ थाने में होगी । इनके पास न पासपोर्ट है, न थाने में इनकी रिपोर्ट है । चलिये । ६३४

सलीम: घबराओ नहीं बेटा । हम भी आते हैं, अभी । ६३५

00 काज़िम इंस्पेक्टर के साथ जाता है । आमिना दौड़कर कमरे में जाती है और दरवाज़ा बन्द कर लेती है । ६३६

अम्मा: आमिना, आमिना, दरवाज़ा खोलो बेटी, दरवाज़ा खोलो । ६३७
आमिना, दरवाज़ा खोलो, दरवाज़ा खोलो बेटी ।
दरवाज़ा खोलो, आमिना । ०० वह रोने लगती है ००

०० दृश्यान्तर । मैजिस्ट्रेट की कचहरी । ६३८

मैजिस्ट्रेट: काज़िमन मिर्ज़ा, वल्द हलीम मिर्ज़ा, साकिने पाकिस्तान, ६३९
हाल वारिदे हिन्दुस्तान को चौबीस घंटे के अन्दर
हिन्दुस्तानी पुलिस हिन्दुस्तान की सरहद के उस पार
पहुंचा दे ।

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का मकान । ६४०

सलीम: बेटी । ६४१

०० आमिना बिना जवाब दिये ऊपर चली जाती है । ६४२

अम्मा: मुझे तो यह वहम साये जाता है कि कहीं कोई रोग न ६४३
पाल ले ।

०० शमशाद आंगन में आता है । ६४४

शमशाद: सिकन्दर, सिकन्दर । ६४५

सलमा: सिकन्दर, शमशाद मियां तुमसे मिलने आये हैं । ६४६

सलमा: मैं कह रही हूं न, बाहर खड़े तुम्हारा इन्तिज़ार कर ६४७
रहे हैं ।

सिकन्दर: भाभी, कुल नौ दिन रह गये हैं मेरे इम्तिहान में । नौ ६४८
दिन का मतलब समझती हैं न आप ?

सलमा: ज़रा-सी देर में क्या हो जायेगा ? मैं इतने में आमिना से ६४९
बात कर लूं । आमिना से पूछ तो लूं, इनकी क्या राय है
शमशाद के बारे में ।

सिकन्दर: वैसी कोई ख़ास ख़राबी तो नहीं । बस ज़रा-से बोर हैं ६५०
शमशाद भाई ।

सलमा: मैं आमिना से पूछ रही हूं, तुम से नहीं । ६५१

आमिना: भाभी । मैंने आप से कित्ती बार कहा है, मेरी शादी का ६५२
ख़याल छोड़ दीजिये । मैं कभी शादी नहीं करूंगी, किसी से
भी नहीं ।

०० आमिना रोने लगती है और सिकन्दर प्यार से उसके सिर ६५३
पर हाथ फेरता है ।

अम्मा: ०० सलमा से ०० है । मेरी तरफ़ से क्या इन्कार है ? ६५४
तुम उसे तो राज़ी कर लो । निगोड़ी सती हो रही है
काज़िम के पीछे ।

सलमा: पहले तो शमशाद से मिलती भी थी, हंस-बोल भी लेती थी । ६५५
अब तो साये से भी कतराती है ।

अम्मा: मैं तो ठहरी मां । अल्लाह रखे तुम भाभी हो । कहीं ले ६५६
जाओ, किसी बहाने से मिलाओ दोनों को ।

सलमा: आमिना, आमिना । ६५७

आमिना: जी । ६५८

सलमा: आमिना, सिकन्दर मियां के इम्तिहान में के दिन बाक़ी हैं ? ६५९

आमिना: कुः । ६६०

सलमा: सलीम चिश्ती की दरगाह पे चलती हो ? मन्नत मांग आयें । ६६१

आमिना: मेरी पहले कब सुनी है सलीम चिश्ती ने, जो आज सुनेंगे ? ६६२

अम्मा: क्यों फ़िज़ूल कुफ़्र बक रही हो ? क्या एक दुआ क़बूल ६६३
न हुई तो कोई दुआ क़बूल न होगी ?

०० दृश्यान्तर । सलीम चिश्ती की दरगाह पर । ६६४

आवाज़ें: आइये, आइये । हाय अल्लाह । ६६५

सलमा: ज़रा संभाल के । ६६६

शमशाद: यह जोधा बाई का महल है । यहां बीच में ... ६६७

सलमा: अरे मियां, तुम गाइड क्यों नहीं बन जाते ? कब से बक-बक ६६८
बक-बक किये जा रहे हो ।

शमशाद: गाइड ? हैं । वह तो सिर्फ़ इमारतें दिखा सकते हैं । ६६९

सलमा: और तुम ? ६७०

शमशाद: मैं ? क्या गहरे गहरे घाव हैं तीरे मलाल के । ६७१
आओ तुम्हें दिखा दूं कलेजा निकाल के ।।
पसन्द आया ?

आमिना: हूं । ६७२

शमशाद: कोई बात नहीं । यह तो देखिये कितने शेर याद हैं ६७३
मुझे । ..... हूं, हूं, शायद आप नाराज़ हो गईं ।
देखिये कितने शेर याद हैं मुझे । सर से पांव तक
जिस जगह के लिये जितने शेर कहो, सुना दूं ।
सर से पा तक एक मस्ताना अदा छाई हुई ।
उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोश में आई हुई ।।

आमिना: भाभी, देखिये मुन्ना कहां गया है ? ६७४

सलमा: अरे मुन्ना । ६७५

शमशाद: आपा, यहीं पर तानसेन बैठा करते थे और तान लगाते थे -- ६७६
हा अ अ - बाबुल मोरा, नहियर छूट ...
आपा, चलिये न पंचमहल देखने ।

सलमा: मियां, अब मुझसे नहीं चला जायेगा । तुम लोग जाओ । ६७७
तुम्हारी टांगें किस बीमारी ने पकड़ ली हैं ? तू जा ।

शमशाद: चलिये न । ६७८

00 शमशाद और आमिना जाते हैं । ६७९

शमशाद: वह दीवाने ख़ास है । वहां न जाने कितनों की क़िस्मतें ६८०
बनी हैं, कितनों की बिगड़ी हैं । न जाने मेरी क़िस्मत
बिगड़ेगी या ...या बनेगी । .....
जानती हो एक दिन, उसी जगह पर जहां तुम खड़ी हो,
मेहरुन्निसा खड़ी थी और यहां ...यहां सलीम खड़ा था ।
उसके दोनों हाथों में कबूतर थे । इतने में जहांपनाह ने
सलीम को याद किया तो सलीम ने दोनों कबूतर उसके हाथ
में थमा दिये । और जब वह लौट कर आया तो उसने
देखा कि एक कबूतर है । तो उसने मेहरुन्निसा से पूछा,
दूसरा कबूतर ? तो मेहरुन्निसा ने कहा, वह तो उड़ गया ।
सलीम ने पूछा, वह कैसे ? तो उसने कहा, ऐसे ।

आमिना: 00 वह शमशाद का हाथ थाम लेती है 00 ६८१
दूसरे को नहीं उड़ने दूंगी, दूसरे को नहीं उड़ने दूंगी ...
नहीं उड़ने दूंगी ।

00 दरगाह से क़व्वाली की आवाज़ आती है । ६८२

क़व्वाली: सूनी रुत में छाई बदरिया चमकी बिजुरिया साथ । ६८३
डूबो तुम भी संग मेरे या थामो मेरा हाथ ।।

मौला सलीम चिश्ती आक़ा सलीम चिश्ती ।
मौला सलीम चिश्ती आक़ा सलीम चिश्ती ।।

आबाद कर दो दिल की दुनिया सलीम चिश्ती ।
आक़ा सलीम चिश्ती मौला सलीम चिश्ती ।।

जितनी बलाएं आईं सब को गले लगाया ।
खूं हो गया कलेजा शिकवा न लब पे आया ।।

हर दर्द हमने अपना अपने से भी छुपाया ।
तुम से नहीं है कोई पर्दा सलीम चिश्ती ।।

जायेगा कौन आ के प्यासा तुम्हारे दर से ।
कुछ जाम से पियेंगे, कुछ महरबां नज़र से ।।

यह संगे दर तुम्हारा तोड़ेंगे अपने सर से ।
यह दिल अगर दोबारा टूटा सलीम चिश्ती ।।

00 दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा का घर । वह मकान के ६८४
बाहर जाने वाले हैं ।

आमिना: अब्बू जी, शेरवानी मैं पहनाऊंगी । ६८५

सलीम: आज तो बड़ी ख़ुश नज़र आ रही है तू । बस ख़ुश ही रहा कर । ६८६

आमिना: हां । ६८७

सलीम: चुड़ैल । ६८८

बाकर: अरे । अभी आप गये नहीं ? वहां मीटिंग तो शुरू हो गई होगी । शायद वहां आगरे के कोटा की बात हो । ६८९

सलीम: क्या रखा है इन मीटिंगों में ? रतनलाल चिल्लुम कर रहे होंगे कि प्रेसिडेन्ट चुन लिये जायं । चुन लिये जायेंगे, इसीलिये ६९०

बाकर: सुना है वहां किसी ने आप के नाम की मुख़ालिफ़त की है ? ६९१

सलीम: अपने नाम की मुख़ालिफ़त सबसे ज़्यादा मैंने की है । ६९२

बाकर: आप सदर बन जाते तो क्या बुरा था ? ६९३

सलीम: नहीं भाई, अब तो ज़िन्दगी जिस तरह गुज़रती है ... ६९४

सिकन्दर: oo वह अख़बार लेकर आता है oo
अब्लू मियां, अब्लू मियां, अब्लू मियां, देखिये, मैं पास हो गया । ६९५

बाकर: शाबाश, सच ? ६९६

सिकन्दर: अरे नम्बर, नम्बर देखिये आप । ६९७

सलीम: मेरे सर की क़सम ? ६९८

सिकन्दर: नम्बर देखिये । ६९९

सलीम: जाओ, मेरी ऐनक ले आओ । ७००

आमिना: हां । ७०१

सलीम: oo वह ऐनक लाते हैं oo
अरे वाह, मियां, वाह । ७०२

oo दृश्यान्तर । तस्वीर खिंचाई जा रही है । ७०३

फ़ोटोग्राफ़र: आप लोग ज़रा क़रीब आइये । हैं, बाकर मियां, ज़रा क़रीब आइये, बेगम साहिबा, आप भी क़रीब आइये, सब लोग क़रीब हो जाइये । हां, रेडी, लुक ऐट द कैमरा, स्माइल प्लीज़ । ज़रा मुस्कराइये । रेडी, वन, टू । थैंक यू । ७०४

oo दृश्यान्तर । सिकन्दर मिर्ज़ा अपने कुछ दोस्तों के साथ पहलवान चायवाले की दुकान पर बैठे हैं । ७०५

दोस्त: सिकन्दर ? ७०६

सिकन्दर: हूं ? ७०७

दोस्त: अब तक कितने एप्लीकेशन दे चुके हो ? ७०८

सिकन्दर: चालीस से कम तो नहीं होगा । ७०९

दोस्त: मुझ से बहुत पीछे हो, यार । अब तक साठ के ऊपर पहुंच चुका हूं मैं । ७१०

दूसरा दोस्त: हटे रहो, प्यारे । अरे धार पर । ७११

सिकन्दर: जल्दी करो । हम लोगों को जाना चाहिये । ७१२

दोस्त: हां, हां, चलो । ७१३

दूसरा दोस्त: कहां ? तुम्हारे बिना कौन-से दफ़्तर की कुर्सी ख़ाली पड़ी है ? ७१४

सिकन्दर: अंधेर है साला अंधेर । ७१५

दोस्त: अरे यार, मालूम नहीं कब तक हम लोग इस तरह बेकार बैठे रहेंगे ? ७१६

पहलवान: यारो, तुम्हें फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है । जब तक पहलवान ज़िन्दा है, तुम्हारा खाता बन्द नहीं होगा । चाय पीते रहो, नाश्ता करते रहो, जब नौकरी मिले, दे देना । ७१७

सिकन्दर: यह हुई न बात पहलवान । इस भरी दुनिया में हम लोगों को सिर्फ़ तुम्हारा ही सहारा है । ७१८

सभी दोस्त: हां, हां । ७१९

दोस्त: अरे पहलवान, आज तो मुझे भी नौकरी मिल जाती, लेकिन वहां एक पंजाबी बैठा था । वह मुझे कैसे लेता ? ७२०

सरदार दोस्त: बक बक न कर, यार । उसने मुझे भी तो नहीं लिया । साला रिश्वत खाता है । ७२१

पहलवान: हर जगह यही गोलमाल है । मैंने भी सत्याग्रह में हिस्सा लिया, जेल गया, टांगें तुड़वाईं । लेकिन जब आज़ादी आई तो मलाई कुत्ते खाने लगे । ७२२

०० सड़क से जुलूस और नारों की आवाज़ । ७२३

जुलूस: शू मैन्यूफ़ैक्चरर्स एसोसियेशन, ज़िन्दाबाद । ७२४
जूतेवालों के नेता रतनलाल, ज़िन्दाबाद ।
हमारी मांगें, पूरी करो ।
आगरा को, कोटा दो ।
जूतेवालों के नेता भगवतीसिंह, ज़िन्दाबाद ।
शू मैन्यूफ़ैक्चरर्स एसोसियेशन, ज़िन्दबाद ।
हमारी मांगें, पूरी करो । हमारी मांगें, पूरी करो ।

दोस्त: लो, अब इन जूतेवालों में भी रुका हो गया । ७२५

दूसरा दोस्त: अब क्या सरकार इनके आगे झुक जायेगी ? ७२६

जुलूस: जूतेवालों के नेता भगवतीसिंह, ज़िन्दाबाद । ७२७
हमारी मांगें, पूरी करो । हमारी मांगें, पूरी करो ।
कारख़ाना बन्द करो ।
यू मैन्यूफ़ैक्चरर्स एसोसियेशन, ज़िन्दाबाद
०० सलीम मिर्ज़ा के कारख़ाने के आगे ००
मिर्ज़ा जी, कारख़ाना बन्द करो ।

फ़ख़रुद्दीन: सलीम भाई, कारख़ाना बन्द कीजिये । ७२८

सलीम: सुब्हान अल्लाह, हां, हां, ज़रूर, ज़रूर । बाकर मियां, ७२९
काम बन्द करवा दो ।

बाकर: बन्द कर दो, भई, बन्द कर दो । ७३०

रतनलाल: मिर्ज़ा जी, आप भी आइये । ७३१

सलीम: मियां, रोज़े के दिन हैं । यह महीने तो आप जानते हैं ७३२
मैं इबादत में गुज़ारता हूं ।

फ़ख़रुद्दीन: और बाकर मियां, आप ? ७३३

बाकर: मुझे कोर्ट जाना है, वरना मैं आप लोगों के साथ ज़रूर ७३४
आता ।

रतनलाल: ठीक है । पूछना हमारा फ़र्ज़ था । अब आना न आना ७३५
आप का काम ।

फ़ख़रुद्दीन: यू मैन्यूफ़ैक्चरर्स एसोसियेशन, ज़िन्दाबाद । ७३६
अपने साथ जो आयेगा,

सभी: जीत का फल वह पायेगा । ७३७

रतनलाल: जो अपने साथ न आयेगा, ७३८

सभी: रोयेगा, पछतायेगा । ७३९

रतनलाल: जो अपने साथ न आयेगा, ७४०

सभी: रोयेगा, पछतायेगा । ७४१

रतनलाल: यू मैन्यूफ़ैक्चरर्स एसोसियेशन, ज़िन्दाबाद । ७४२

बाकर: धमकी देते हैं कम्बख़्त । चलिये, चलिये । ७४३
चलिये, काम शुरू कीजिये ।

प्यारेलाल: चलो, भई, चलो । सब लोग यहीं गेट पर जमा हो गये । ७४४

०० दृश्यान्तर । शमशाद और आमिना दोनों पेड़ के नीचे ७४५
बैठे हैं ।

शमशाद: हूं, आ । अरे, आओ बैठो न । ७४६

आमिना: क्या कर रहे हैं ? ७४७

शमशाद: आमिना ? ७४८

आमिना: हूं । ७४९

शमशाद: आमिना, सुन । ७५०

आमिना: छोड़ो न । ....बुरा मान गये । इतने उतावले क्यों हो रहे हैं आप ? शादी में ऐसी कौन-सी देर है ? ७५१

शमशाद: अरे, क़ाज़ी के दो बोलों से कुछ फ़र्क़ पड़ता । ७५२

आमिना: फ़र्क़ नहीं पड़ता तो क्यों नहीं कर लेते शादी ? ७५३

शमशाद: वह जनम-जनम की कुंआरी मोहसिना आपा जो बैठी हुई हैं न ? पता नहीं अम्मू उनके लिये कब लड़का ढूंढ़ेगी और कब आयेगी हमारी बारी । ७५४

आमिना: तुम्हारे भी तो इतने दोस्त हैं । क्यों नहीं किसी को फांस लेते ? ७५५

शमशाद: हूं छोड़ो । दुआ करो भाग जाये किसी के साथ । ७५६

.... मन्नो ?

आमिना: हूं, शमशाद । ७५७

०० दृश्यान्तर । कारख़ाने में मशीनें चल रही हैं । ७५८

बाकर: मुन्शी जी, वह हड़ताल का क्या नतीजा निकला ? ७५९

प्यारेलाल: ७६०

बाकर: अच्छा, वह कितनी जोड़ियों का आर्डर मिला ? ७६१

प्यारेलाल: चार लाख । ७६२

बाकर: चार लाख ! हमें तो कहीं से रुपया मिलेगा नहीं, वरना यह मौक़ा था चार पैसे कमाने का । ७६३

प्यारेलाल: आप टैंडर भर दीजिये । लोन मैं ले आऊंगा । अपनी घरवाली का भाई कबे है ...सूद पर रुपया चलाऊंगा । सो उसी से लोन ले आऊंगा । ७६४

बाकर: मुन्शी जी, रूस का ...रूस का जितना काम मिलेगा, उसमें आप छः आने के हिस्सेदार रहेंगे । ७६५

प्यारेलाल: हैं, हैं जी ? ७६६

बाकर: आप चार आने के हिस्सेदार रहेंगे । ७६७

प्यारेलाल: अभी-अभी तो मैंने सुना था ... ७६८

बाकर: जी हां, जी हां । मतलब यह है कि आप छ: आने के हिस्सेदार रहेंगे । ७६९

प्यारेलाल: हां, हां, छ: आने, शुक्रिया । ७७०

oo दृश्यान्तर । किसी कम्पनी का दफ़्तर । ७७१

सिकन्दर: May I come in Sir? ७७२

सुब्रमणियम: Come in. ७७३

सिकन्दर: Thank you, Sir. ७७४

सुब्रमणियम: Mister Sikander Mirza. ७७५

सिकन्दर: Yes, Sir. ७७६

सुब्रमणियम: Please sit down. ७७७

सिकन्दर: Thank you, Sir. ७७८

सुब्रमणियम: तो आप स्पोर्ट्स में भी दिलचस्पी है ? ७७९

सिकन्दर: थी, अब नहीं है । ७८०

सुब्रमणियम: क्यों ? ७८१

सिकन्दर: वह, जब से स्पोर्ट्स में पॉलिटिक्स शुरू हो गई है, मैंने उससे किनारा कर लिया है । ७८२

सुब्रमणियम: हां, हां । Your chances are bright. You seem to be a smart young man. ७८३

सिकन्दर: Thank you, Sir, thank you. ७८४

oo इतने में टेलीफ़ोन की घंटी बजती है । ७८५

सुब्रमणियम: Subramaniyam here. Yes, yes Sir, Sir. ७८६
हां, हां, alright sir.
oo वह रिसीवर हुक पर रख देता है oo
Mr. Mirza, I am sorry. The post has been filled.
जी० एम० ने किसी और को रख लिया है ।

सिकन्दर: किसी और को ? ७८७

सुब्रमणियम: जी हां, किसी और को । The post was created for someone else. ७८८

सिकन्दर: तो फिर यह पोस्ट पेपर में ऐडवरटाइज़ क्यों किया गया था ? इस ... इस सारे ढोंग की क्या ज़रूरत थी ? ७८९

सुब्रमणियम: Company by-laws. ७९०

oo सिकन्दर जाने लगता है । ७९१

सुब्रमणियम: Mr. Mirza, take my advice. You are wasting your time in this country.
आप पाकिस्तान क्यों नहीं चले जाते ? वहां, आप लोगों के लिये आसान रहता । ७९२

सिकन्दर: Thank you, Sir, thank you. ७९३

oo दृश्यान्तर । ताज महल में आमिना और शमशाद । ७९४

शमशाद: आ मि ना । अब तुम पुकारो, पुकारो न । ७९५

आमिना: शमशाद । ७९६

शमशाद: हूं, हूं । ऐसे नहीं, ज़ोर से । पुकारो न । ७९७

आमिना: श म शा द । श म शा द । ७९८

oo उसकी आवाज़ गूंजती है । एक गाइड कुछ लोगों को शाहजहां और मुमताज़ महल के बारे में बता रहा है । शमशाद और आमिना अपने में खोये एक दूसरे की ओर बढ़ते आ रहे हैं । ७९९

गाइड: लेडीज़ एंड जैंटलमेन । जब मलिका मुमताज़ महल की रूह ८००

इस दुनिया से उस दुनिया में चली गई तो शाहजहां की बेचैन रूह को तब तक चैन नसीब न हुआ जब तक वह यहां अपनी महबूबा के पास पहुंच न गये ।
oo अचानक गाइड शमशाद और आमिना को चुम्बन करते देखता है oo
ला हौल विला क़ुव्वत! इन हरकतों के लिये यही जगह रह गई थी ।

oo लोग हंसते हैं । आमिना भाग जाती है । ८०१

टूरिस्ट: उड़ गई चिड़िया । ८०२

oo दृश्यान्तर । रतनलाल के दफ़्तर में । ८०३

रतनलाल: मिर्ज़ा जी, मैनिजिंग कमेटी का यह फ़ैसला है कि टेन्डर वही भर सकेगा, जिसने हड़ताल में हिस्सा लिया हो । ८०४

सलीम: यह फ़ैसला कब हुआ ? मैनिजिंग कमेटी का मेम्बर तो मैं भी हूं । ८०५

रतनलाल: आप मीटिंग में आते कब हैं ? सुना है हड़ताल वाले दिन भी आपने कारख़ाना बन्द नहीं किया था । ८०६

सलीम: रतनलाल जी, ईद सर पर थी और बहुत दिनों बाद चार पैसे कमाने का मौक़ा मिला था । ८०७

रतनलाल: तो फिर आप ही सोचिये । जो सबके लिये थोड़ा-सा नुक़सान नहीं बर्दाश्त कर सकता, वह फ़ायदे में हिस्सेदार कैसे बन सकता है ? ८०८

सलीम: ठीक है । ०० वह जाने लगते हैं ०० ८०९

फ़ख़रुद्दीन: ०० प्रवेश करते हुए ०० आदाब अर्ज़ । ०० बाकर से ०० सलाम अलैकुम । कैसे हो बरख़ुरदार ? ८१०

बाकर: आदाब अर्ज़ । ८११

०० सलीम मिर्ज़ा और बाकर मिर्ज़ा जाते हैं । ८१२

रतनलाल: आदाब अर्ज़, फ़ख़रुद्दीन साहब । ८१३

०० दृश्यान्तर । तांगे पर । ८१४

बाकर: मैनिजिंग कमेटी की मीटिंग में आपको जाना चाहिये था । ८१५

सलीम: उससे बड़ी ग़लती यह कि हड़ताल के दिन हमने कारख़ाना बन्द नहीं किया । ८१६

बाकर: सबसे बड़ी ग़लती तो आज समझ में आयी है । इस मुल्क में हम भिखारी बन के रह सकते हैं , व्यापारी बन के नहीं । ८१७

तांगेवाला: यह सौ टके की बात हुई है, मियां । ८१८

सलीम: क्यों मियां, तुम भी थक गये ? ८१९

बाकर: आप अब भी न थके हों तो शौक़ से यहां रहिये । मेरा तो आब-ओ-दाना उठ गया है । ८२०

०० दृश्यान्तर । सिकन्दर और उसके दोस्त चाय की दुकान पर बैठे हैं । ८२१

पहलवान: अबे लमडे, यह चाय सिकन्दर मियां को दो । ८२२

सिकन्दर: लाओ यार । ८२३

दोस्त: यार, जूतेवालों का जुलूस याद है तुम्हें ? ८२४

सिकन्दर: हूं, हूं । ८२५

दोस्त: सरकार ने एक-एक मांग मान ली उनकी । ८२६

दूसरा दोस्त: जूते में बड़ी ताक़त है, यार । ८२७

सरदार: यार, हमें भी ऐसा ही कुछ करना चाहिये । अब तो इन ऑफ़िसों के चक्कर लगाते-लगाते काफ़ी वक़्त ज़ाया हो गया है । ८२८

सिकन्दर: अरे पहलवान, कुछ खिला भी दो । भूखे पेट से यह चाय भी अच्छी नहीं लगती । ८२९

पहलवान: क्यों नहीं, लीजिये । आप समोसे खाइये । ८३०

सिकन्दर: समोसे आज़ादी से पहले के या बाद के ? ८३१

पहलवान: अभी गर्म किये देता हूं । ८३२

दोस्त: ज़रा चाय भी । ८३३

पहलवान: बहुत ख़ूब । ८३४

दोस्त: अंग्रेज़ चले गये, औलाद छोड़ गये । साला बुड्ढा कहता है तुम्हारी इंग्लिश वीक है । ८३५

सिकन्दर: कल मुझे भी इन्टरव्यू में एक ने यही जवाब दिया । कहता है तुम्हारी हिन्दी कमज़ोर है । ८३६

दोस्त: तू बक-बक मत कर, यार । दो-चार दिन तुझे नौकरी नहीं मिली, तू खिसक ले यहां से । ८३७

सरदार: यह बात बिल्कुल ठीक है । मुसीबत हमारी है । हम कहां जायें ? ८३८

सिकन्दर: अफ़्रीका जाओ, कैनेडा जाओ । क्या हिन्दू कहीं नहीं जाते नौकरी के लिये ? ८३९

सरदार: सब जाते हैं, यार । लेकिन जायें क्यों ? हमें तो साली ८४०

नौकरी यहीं मिलनी चाहिये और यहीं मिलनी चाहिये ।

दोस्त: बिल्कुल ठीक, सही बात । ८४१

०० दृश्यान्तर । रेलवे स्टेशन । बाकर मिर्ज़ा पाकिस्तान जा रहा है । ८४२

मुन्ना: दादा मियां । दादा मियां, ख़ुदा हाफ़िज़ । ८४३

०० तांगे में । ८४४

तांगेवाला: आज किसे छोड़ आये, मियां ? ८४५

सलीम: बाकर मिर्ज़ा को । ८४६

तांगेवाला: वाह मियां वाह । बड़ी हिम्मत है । जिगर के टुकड़ों को एक-एक करके छोड़ आये और ख़ुद यहां डटे हो । ०० घोड़े से ०० चलो बादशाद । हाय, हाय, कैसा जालिम जमाना आ गया है । ८४७

०० दृश्यान्तर । आमिना खाने के लिये प्लेटें लगा रही है । सब खाने पर बैठते हैं । ८४८

अम्मा: बाकर के चले जाने से घर कितना सूना हो गया है । ८४९

सलीम: एक दिन सिकन्दर मिर्ज़ा भी नौकरी की तलाश में हमें ८५०

छोड़ कर चले जायेंगे ।

आमिना: जाने दीजिये । मैं जो हूं । ८५१

सलीम: तू ? मेरी चिड़िया पिंजरा खुलने की देर है बस, फट ८५२
पराई मुंडेर पर जा बैठेगी ।

सिकन्दर: अब्बू, पर उखाड़ क्यों नहीं देते ? लंडूरी चिड़िया कहां ८५३
जायेगी ?

आमिना: चुप, पाजी । ८५४

सलीम: बस, हम दोनों रह जायेंगे । ८५५

अम्मा: आपको किसने रोक रखा है ? यहां कौन-सा खज़ाना ८५६
गाड़ रखा है जिसे साथ नहीं ले जा सकते ?

सलीम: यह उम्र वतन छोड़ कर जाने की नहीं, इस दुनिया से उस ८५७
दुनिया में जाने की है ।

दादी: मुन्ना, ओ मुन्ना । दौड़ के आना । ..... किस को ८५८
पुकार रही हूं ? वह सब तो चले गये । मुट्ठी भर मिट्टी
भी नहीं दे गये ।

00 दृश्यान्तर । अजमानी साहब का दफ्तर । ८५९

फ़खरुद्दीन: यह आप क्या कह रहे हैं ? मैं पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ता ८६०
हूं । तीसों रोज़े रखता हूं । पन्द्रह दिन बाद मैं हज को
जा रहा हूं । मैं इतनी बेईमानी कर सकता हूं ?

अजमानी: यह तुम्हारा बेईमानी नहीं तो दूसरा क्या है ? ८६१
पुट्ठा भी नहीं लगाया । यह देखो, तरबूज़ का छिलका भर
दिया । मिड्लि ईस्ट में हमारा सारा बिज़निस नास
कर दिया ।
00 वह जूते उठाकर फेंकता है 00

फ़खरुद्दीन: सेठ जी, सेठ जी । यह सारी हरामज़दगी कारीगरों की ८६२
है । आप फ़िक्र मत कीजिये, मैं अभी जाकर उनकी ख़बर
लेता हूं ।

अजमानी: अब हम को दूसरा बात सुनने का नहीं, नहीं सुनने का है ८६३
दूसरा बात । उठाओ । दस दिन के अन्दर-अन्दर हमारा
एक-एक पैसा वापस मिलना है ।

फ़खरुद्दीन: आप क्या कह रहे हैं ? मैं पन्द्रह दिन के अन्दर कहां से पैसे ८६४
लाऊंगा ? मैं तबाह हो जाऊंगा, मैं मर जाऊंगा ।

अजमानी: उठाओ उसको । ८६५

00 दृश्यान्तर । शमशाद और आमिना नाव में बैठे हैं । ८६६

आमिना: क्यों ? ८६७

शमशाद: अब्बा की वजह से मैं एक अजीब मुसीबत में फंस गया हूं । ८६८
या जेल में जाकर चक्की पीसूं या उनके साथ कराची भाग
जाऊं । समझ नहीं आता मैं .....

०० वह आमिना को सीने से लगा लेता है ००

.....

मैं वह ग़लती नहीं करूंगा जो क़ाज़िम मिर्ज़ा ने की थी ।
अम्मू को भेज दूंगा । वह आकर तुम्हें ले जायेगी ।
यक़ीन नहीं आता न ? और आयेगा भी कैसे ? एक
मर्तबा इतना बड़ा धोखा जो खा चुकी हो ।

आमिना: शमशाद ... ८६९

शमशाद: मन्नो ...

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा आंगन में अख़बार पढ़ रहे हैं । ८७०
हंसते हुए आमिना उनसे अख़बार छीन लेती है ।

सलीम: अरे, यह क्या हुआ ? किसी चुड़ैल की आवाज़ मालूम होती ८७१
है । ऐ चुड़ैल, लाओ अख़बार, दे मुझे वापस ।

आमिना: नहीं दूंगी । आप पहले चाय पीजिये । ८७२

सलीम: चाय मैं बाद में पी लूंगा । ८७३

आमिना: नहीं, पहले पीजिये । ८७४

सलीम: कम्बख़्त, पहले अपनी दादी अम्मा को जाकर चाय पिला, ८७५
जा ।

आमिना: ०० चाय का प्याला उठाती है ०० ८७६
दादी अम्मा, चाय ।
०० दादी अम्मा को देखकर वह चीख पड़ती है ००
ददूदा!

०० सलीम मिर्ज़ा जल्दी से आते हैं और दादी अम्मा का लटका ८७७
हुआ सर उठाकर तकिये पर रखते हैं । इतने में अम्मा
आती हैं ।

अम्मा: क्या हुआ ? क्या फिर दौरा पड़ गया ? ८७८

सलीम: मैं डाक्टर को बुलाकर लाता हूं । ८७९

अम्मा: अम्मा! ८८०

दादी: हाय, हाय । हवे... ८८१

अम्मा: क्या ? हवेली ? ८८२

दादी: हां, हां । ८८३

अम्मा: डाक्टर आके क्या करेगा ? इनकी जान तो हवेली में ८८४
अटकी हुई है । इन्हें तो वहीं ले के चलो, बस ।

सलीम: अच्छा, अजमानी से पूछूं । ८८५

अम्मा: अम्मा, अम्मा, घबराओ मत । ८८६

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा अपनी पुरानी हवेली पर । ८८७

अजमानी: कमाल किया मिर्ज़ा जी । इसमें पूछने का क्या बात है । ८८८
बग़ैर पूछे ही ले आते ।

सलीम: शुक्रिया, इनायत है । हालत संभलते ही उन्हें ले जाऊंगा । ८८९
शायद आपकी दुआ से वह कुछ दिन और जी जायें ।

अजमानी: कुछ दिन क्या, बहुत दिन जियेगा । चलो, चलो, ले आओ । ८९०
आदाब अर्ज़ ।

सलीम: आदाब अर्ज़ । ८९१

०० सलीम मिर्ज़ा और सिकन्दर मिर्ज़ा दादी को पालकी में ८९२
डालकर लाते हैं ।

सलीम: अम्मा जान, देखो, हम आ गये पुरानी हवेली में । ८९३

०० दादी आंखें खोलकर चारों ओर निगाह दौड़ाती हैं और ८९४
कुछ पुरानी यादों से लिपटी परिवार के लोगों की आवाज़ें
उनके कानों में गूंजने लगती हैं । ... फिर उनका सर
एक ओर को लुढ़क जाता है ।

०० दृश्यान्तर । रेलवे स्टेशन । आमिना क़ुर्आ ओढ़े प्लेटफ़ार्म ८९५
पर खड़ी है । शमशाद गाड़ी में बैठा है । गाड़ी चलने
लगती है ।

०० दृश्यान्तर । आमिना कुछ सी रही है और सिकन्दर उसके ८९६
पास लेटा पुस्तक पढ़ रहा है ।

अम्मा: सिकन्दर बेटे, ज़रा बाज़ार से एक बल्ब ले आओ । मेरे ८९७
कमरे का ख़राब हो गया है ।

सिकन्दर: कोई फ़ायदा नहीं, अम्मी । जो आज आयेगा कल फिर ८९८
ख़राब हो जायेगा ।

अम्मा: हूं, तुम्हें तो पड़े रहने का बहाना चाहिये । हाथ-पांव ८९९
हिलाया करो, मियां ।

सिकन्दर: मेरा हाथ-पांव हिलाना किसी को पसन्द नहीं, वरना ९००
मेरी नौकरी न लग गई होती ?

अम्मा: बाकर मिर्ज़ा ख़त पर ख़त लिख रहे हैं कि सिकन्दर को भेज ९०१
दो । मुझे फ़ौज का बड़ा आहैर मिला है । सिकन्दर
आकर मेरा हाथ बंटा लेगा ।

सिकन्दर: तिजारत मेरे बस का रोग नहीं । और अब्बू जी को छोड़ ९०२
कर तो मैं हरगिज़ नहीं जाऊंगा ।

अम्मा: ऐ, मैं सदके गई । इतना ही अब्बू जी का ख़याल है तो उनका हाथ बंटाओ । शहर में इतना तनाव और वह अकेले मारे-मारे फिरते हैं । ६०३

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा तांगे पर सवार हैं । ६०४

तांगेवाला: पहलवान, गाड़ी ज़रा संभाल के । पहलवान, ज़रा देखो, पहलवान, आंखों से ६०५

०० तांगा गाड़ी से टकरा जाता है और लोगों में मार-पीट शुरू होती है । कोई सलीम मिर्ज़ा पर ईंट से वार करता है । लोग उनके कारख़ाने में आग लगा देते हैं । ६०६

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा को चोट आई है । सिर पर पट्टी बांधे वह पलंग पर लेटे हुए हैं । ६०७

अम्मा: अब इस मुल्क में पानी भी पिऊं तो हराम है । ६०८

अजमानी: ०० बाहर से ०० सिकन्दर मियां ? ६०९

०० अजमानी साहब की आवाज़ सुनकर अम्मा और आमिना पर्दे के पीछे चली जाती हैं । ६१०

अजमानी: सिकन्दर मियां ? ६११

सिकन्दर: आइये चचा ।

सलीम: राम, राम, अजमानी भाई । ६१२

अजमानी: कहिये, मिर्ज़ा जी, ज्यास्ती चोट तो नहीं आया ? ६१३

सलीम: अभी मरूंगा नहीं । ६१४

अजमानी: हम सुना, आप का फ़ैक्टरी भी जला दिया । ६१५

सलीम: मेरी आंखों के सामने । ख़ैर, अच्छा है । अब ख़ुदा को बहुत लम्बा हिसाब नहीं देना पड़ेगा । ६१६

अजमानी: भगवान जाने यह आग लगा कैसे । हम समझता है इसमें ज़रूर किसी का शरारत है । अब का शहर जल रहा है । ६१७

सलीम: इंशाअल्लाह, दो-चार दिन में सब ठीक हो जायेगा । ६१८

अजमानी: अब तो नवा सिरे से काम करने के वास्ते फ़ैक्टरी को बहुत रिपेयर मांगता है । हमारे लायक़ कोई सेवा हो तो हम हाज़िर है । ६१९

सलीम: अजमानी साहब, अब इस घर का ख़र्चा ही कितना रह गया है ? एक दिन आमिना भी चली जायेगी । बाक़ी रह गये सिकन्दर, हम दोनों बीवी-मियां । इतना हुनर इन हाथों में है । ०० वह अपने दोनों हाथों को देखते हैं । ६२०

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा अपने ही घर में कारीगरों के ६२१

साथ बैठे जूते बना रहे हैं ।

अम्मा: ज़रा सुनिये । ६२२

सलीम: ०० बाहर आकर ०० फ़रमाइये । ६२३

अम्मा: इस पिंजरे में यूं ही कौन-सा आराम था जो चार नामहरम ६२४
भी लाकर बिठा लिये आपने ? मैं कहती हूं क्या ज़रूरत
है यह सब करने की ? अल्लाह का दिया अभी बहुत कुछ है ।
तब तक नौकरी मिल ही जायेगी सिकन्दर मिर्ज़ा को ।

सलीम: तो तुम समझती हो मैं बेटे की कमाई खाऊंगा ? जब ६२५
तक हाथ-पांव चल रहे हैं, मुझसे ऐसी उम्मीद न करना ।

०० प्यारेलाल आता है । ६२६

प्यारेलाल: मियां ? ६२७

सलीम: कहो प्यारेलाल । अब तो बीवी खुश है ? हर वक़्त उसके ६२८
पास रह सकोगे ?

प्यारेलाल: मियां की बातें । बिस्का रो-रो के बुरा हाल है । ६२९

सलीम: इसमें रोने की क्या बात है ? प्यारेलाल, सावन की ६३०
हरियाली देखने के बाद मुहर्रा देखने के लिये भी तैयार
रहना चाहिये ।

प्यारेलाल: मेरे लिये क्या हुक्म है, मियां ? ६३१

सलीम: प्यारेलाल । कहीं और काम तलाश कर लो । यहां तो ६३२
सब लुटलुटा गया ।

प्यारेलाल: अच्छा मियां । ६३३

०० दृश्यान्तर । जूतों की गली । सलीम मिर्ज़ा और उनके साथ ६३४
टोकरी ढोनेवाला लड़का ।

व्यापारी: क्या लेना है ? ६३५

सलीम: आठ रुपये । ६३६

व्यापारी: साढ़े छ: ...पौने सात । ६३७

सलीम: साढ़े सात । ६३८

व्यापारी: माल दिखाओ । ६३९

०० सलीम मिर्ज़ा लड़के के सर से टोकरी नीचे रखवाते हैं । ६४०

व्यापारी: ०० जूतों को देखता है ०० पौने सात । ६४१

सलीम: ०० टोकरी उठवा लेते हैं ०० नहीं देना । ६४२

व्यापारी: सात रुपया । ६४३

सलीम: नहीं देना । ६४४

व्यापारी: चलो, साढ़े सात । ६४५

सलीम: आपकी बात रखता हूं । ६४६

व्यापारी: oo अपने लोगों से oo माल ज़रा ठीक से देखना । ६४७

oo इसी बीच पुलिसवाला सलीम मिर्ज़ा के पास आता है । ६४८

इंस्पेक्टर: मिर्ज़ा साहब, आपके नाम वारंट है । थाने चलिये । ६४९

सलीम: वारंट ? किस बात का ? ६५०

इंस्पेक्टर: आपको जासूसी के इल्ज़ाम में गिरिफ़्तार किया जाता है । चलिये । ६५१

सलीम: तक़लीफ़ माफ़, मेरा माल वापस कर दीजिये । oo लड़के से oo माल घर ले चलो । ६५२

oo दृश्यान्तर । लड़के चाय की दुकान पर सिकन्दर के वालिद की गिरिफ़्तारी का ज़िक्र कर रहे हैं । ६५३

दोस्त: आ गया, आ गया, सिकन्दर आ गया । अरे क्या हुआ ६५४

भई सिकन्दर, कुछ पता चला क्या बात थी ?

सिकन्दर: कोई बात नहीं थी, यार । पुलिसवालों ने रस्सी को सांप समझ लिया । भाई साहब ने हवेली का नक़्शा मंगाया था । न जाने कहां से कहां जोड़ लिया कम्बख़्तों ने । ६५५

दोस्त: हां, सबूत न मिले तो ख़ुदा भी छूट जाता है । ६५६

सिकन्दर: क्या मतलब है तुम्हारा ? ६५७

दोस्त: यार, इस का नोटिस न लिया करो । यह हमेशा ऐसी बात करता है । चलो, भाई बलबीर आ गया । ६५८

बलबीर: चलो भाई, दस्तख़त करना शुरू कर दो । ६५९

दोस्त: अरे भाई, उसका क्या हुआ, छपाई का ? ६६०

बलबीर: पांच रुपये लगेंगे । मेरे पास तो है नहीं । ६६१

सिकन्दर: अरे पहलवान, छोड़ो यह चाय, कुछ चन्दा निकालो । इतना बड़ा मैमोरेन्डम निकाला है यार । ६६२

दोस्त: हां, यह पहलवान अगर दे दे तो बात है । वाह भई, वह आख़िर आज़ादी की लड़ाई लड़ी है । ६६३

पहलवान: दिया । लो, यह गल्ला उठा लो मियां । ६६४

दोस्त: वाह, वाह ... ६६५

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा के आंगन में । ६६६

अम्मा: आज बरी हो गये, लेकिन कल फिर कोई और इल्ज़ाम लगा दिया जायेगा । दुश्मनों की कमी है ? ६६७

सलीम: दोस्तों की भी कमी नहीं । प्यारेलाल तो अपने आदमी थे । अजमानी ने कम दौड़-धूप की ? ६६८

अम्मा: अल्लाह भला करे अजमानी साहब का । दीन-दुनिया दोनों जगह सरफ़राज़ हों । लेकिन इज़्ज़त क्या रह गई ? सड़े तो कर दिये गये कठहरे में .... जहां चोर-उचक्के सड़े होते हैं । ६६९

सलीम: हूं, उस कठहरे में बड़े-बड़े लोग सड़े हो चुके हैं । मैं तो कुछ भी नहीं । ६७०

अम्मा: जी, खुश कर लीजिये यही सोच के । मैं पूछती हूं अब तो अम्मा का पहाड़ भी नहीं, फिर क्यों नहीं चलते यहां से ? ६७१

सलीम: इस वक़्त चला गया तो लोग कहेंगे ज़रूर कोई-न-कोई बात है । समझ गयीं तुम ? ६७२

०० दृश्यान्तर । रात का समय । आमिना सो रही है । ६७३

सिकन्दर: आमिना, ऐ आमिना । ६७४

आमिना: क्या है ? ६७५

सिकन्दर: कितनी देर लगाती हो । ६७६

आमिना: हूं, कहां घूमते रहते हो, क्या करते रहते हो, कुछ पता नहीं । कहां थे अब तक ? ६७७

सिकन्दर: अब्बू पूछ रहे थे क्या ? ६७८

आमिना: हूं, इतनी इतनी रात गये कहां रहते हो ? ६७९

सिकन्दर: नौकरी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते थक गया । सोचा, किसी अमीर की लड़की को ही फंसा लूं । ६८०

आमिना: झूट, बदतमीज़ । ०० दोनों हंसने लगते हैं ०० ६८१

सलीम: आमिना, मैं अन्दर आ जाऊं ? ६८२

आमिना: ०० वह दुपट्टा ओढ़ती है ०० जी अब्बू । ६८३

सलीम: ०० वह अन्दर आते हैं ०० यह कब तशरीफ़ लाये ? सिकन्दर, सिकन्दर। ०० वह उसको एक पर्चा दिखाते हैं ०० यह क्या है ? ६८४

सिकन्दर: अब्बू, इस पर तो बहुत-से लड़कों के दस्तख़त हैं । ९८५

सलीम: मुझे सिर्फ़ तुम्हारे दस्तख़त से मतलब है । मैं कहता हूं ९८६
अगर तुम मेरी परेशानियां बांट नहीं सकते तो कम-से-कम
उनमें इज़ाफ़ा तो न करो ।

सिकन्दर: पर अब्बू, यह सब तो इस लिये है कि परेशानियां कम ९८७
हो जायें ।

सलीम: हां, एक तो तुम्हारे ताया अब्बा ने मेरी परेशानियां कम ९८८
की हैं । अब तुम करने चले हो । अगर यही सब करना है
तो थोड़े दिन और ठहर जाओ । मैं कब तक बैठा रहूंगा
तुम्हें रोकने के लिये ?

आमिना: अब्बू ! ९८९

सलीम: हां बेटी । इनसे यह आख़िरी ख़्वाहिश है । अगर यह ९९०
मान जायें तो आराम से नींद आ जायेगी, वरना ...

आमिना: अब्बू! oo वह रोने लगती है oo ९९१

सलीम: तू क्यों रोती है पगली ? जब तक तेरा डोला न उठ ९९२
जाये, चाहे उधर से भी बुलावा आ जाये, मैं कह दूंगा,
नहीं आता । मत रो ।

oo दृश्यान्तर । आंगन के दरवाज़े पर दस्तक । ९९३

नौकरानी: सलाम, बेगम साहिबा । ९९४

अख़्तर: भाभी, भाभी । ९९५

अम्मा: अरे अख़्तर बेगम ! ९९६

सलीम: कब आईं हैं ? ९९७

अम्मा: तुम कब आईं ? आओ, आओ, अभी-अभी तुम्हारे आने ९९८
की दुआ मांग के दानेदार से उठी थी ।

अख़्तर: देखा, मैं आ गई । ९९९

अम्मा: बहुत अच्छा किया, तुम आ गईं । अरे आमिना, सिकन्दर, १०००
तुम्हारी फूफीजान आई हैं । आओ ।

आमिना: oo धीमी आवाज़ में oo शमशाद ! १००१
सिकन्दर, उठो, जल्दी उठो !

सिकन्दर: क्या है ? क्या क़यामत आ गई ? १००२

आमिना: क़यामत नहीं । फूफी जान आई हैं । १००३

सिकन्दर: फूफीजान ? १००४

आमिना: हां । १००५

सिकन्दर: हाय । शमशाद मियां मान गये आपको । १००६

आमिना: कहा था न मैंने ? उठो, जल्दी उठो । १००७

सिकन्दर: क्या उठूं ? १००८

आमिना: ०० वह नीचे आती है ००
आदाब फूफी जान । वहां जाके तो बिल्कुल बदल गईं। १००९

अख़्तर: अरे आओ, आओ, आओ बेटी, आओ । जीती रहो, जीती रहो । हाय, हाय । और तो वहां हर चीज़ की इफ़रात है । नहीं मिलते तो ऐसे कपड़े । जिधर देखो नाइलोन साड़ी । १०१०

सिकन्दर: आदाब अर्ज़ है, फूफी जान । १०११

अख़्तर: अरे, अरे, आओ भई आओ । आओ बेटा, आओ । बैठो, बैठो । १०१२

अम्मा: आओ बेटा, यहां बैठ जाओ, आओ । १०१३

अख़्तर: पौने पौने कारख़ाना बेचा, कौड़ियों के मोल था । उसका भी आधे से ज़्यादा रुपया बाक़ी है । १०१४

सलीम: सईदुल हक़ मामले के सारे आदमी हैं । पाई-पाई मिल जायेगी । १०१५

अख़्तर: यही कहकर तो शमशाद के अब्बा ने भेजा है मुझे । वहां सलीम भाई बैठे हैं । इंशाअल्लाह ख़ाली हाथ नहीं आओगी । १०१६

अम्मा: हां, हां, क्यों नहीं । १०१७

सलीम: ठीक है, मैं आज ही उनसे बात करता हूं । १०१८

अख़्तर: मिल जाये तो अच्छा है । वहां शादी-ब्याह में बहुत ख़र्च होता है । १०१९

सलीम: जैसे यहां कम होता है । १०२०

अख़्तर: सलीम भाई ने अगर सईदुल हक़ से रुपये दिलवा दिये तो करूंगी बहू के लिये ख़रीदारी । १०२१

०० दृश्यान्तर । अख़्तर बेगम, आमिना के साथ, साड़ी की दुकान में । १०२२

दुकानदार: आइये, आइये, तशरीफ़ रखिये । कहिये, क्या दिखाऊं ? १०२३

अख़्तर: साड़ियां दिखाइये । १०२४

दुकानदार: काटन की या सिल्क की ? १०२५

अख़्तर: सिल्क की । १०२६

दुकानदार: सिल्क की । सिल्क की साड़ियां लाओ भाई । देखिये, यह भी सिल्क की है । १०२७

अख़्तर: अरे, यह नहीं । ज़री की दिखाइये । १०२८

दुकानदार: ज़री की । १०२९

अख़्तर: अच्छी है । १०३०

दुकानदार: जी हां, बहुत अच्छी है ... सिल्क की । १०३१

अख़्तर: हां, बहुत ख़ूबसूरत है । बांध दीजिये । १०३२

दुकानदार: इसे पैक कर दो, भाई । १०३३

00 आमिना एक साड़ी को छूती है और अख़्तर बेगम उस के मन की बात भांप लेती हैं । १०३४

अख़्तर: यह ? ठीक है ? १०३५

आमिना: हां, हां । १०३६

अख़्तर: बांध दो । १०३७

00 दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा के घर का आंगन । अख़्तर अम्मा को साड़ियां दिखा रही हैं । १०३८

अम्मा: बड़ा प्यारा रंग है । कितने में मिली ? १०३९

अख़्तर: यही सौ सवा सौ की होगी । मुझे तो अब याद नहीं रहता । १०४०

अम्मा: बड़ी सस्ती मिली । १०४१

00 आमिना चाय की ट्रे लाती है । १०४२

अख़्तर: चाय बनाना बेटी । अब तक ... १०४३

अम्मा: यह टी कोज़ी कैसी तुमने ? आमिना ने अपने हाथों से बनाई है । १०४४

अख़्तर: हूं । 00 वह बड़ी लापरवाही से टी कोज़ी को रख देती है 00 अरे, यह टी सेट अच्छा है । १०४५

अम्मा: दहेज़ का है । आज पहली बार खोला है । १०४६

अख़्तर: चीनी एक चम्मच । १०४७

अम्मा: हाय । यह है वह साड़ी, आमिना की रंगत पर खिलेगी भी । ज़रा यहां आना बेटी । १०४८

अख़्तर: मेरी तो नज़र नहीं पड़ी थी इसपर । आमिना ने उंगली रख दी । सोचा, ले चलूं मोहसिना के लिये । १०४९

oo यह सुनते ही आमिना अपने कंधे से साड़ी हटा देती है । १०५०

सलीम: oo वह आंगन में आते हैं oo १०५१
ओ हो, तुम तो, मालूम होता है, सारा बाज़ार ख़रीद लाई हो ।

अख़्तर: कुछ ख़ास नहीं, भाई जान । इतनी भीड़ है बाज़ार में आजकल । १०५२

अम्मा: oo वह एक साड़ी उठाती हैं oo १०५३
ऐ है, यह रंग क्यों ले लिया ?

अख़्तर: शमशाद की दुल्हन के लिये ...वह ज़रा सांवली है न ? १०५४

अम्मा: तो क्या ... शमशाद की शादी हो गई ? १०५५

अख़्तर: अल्लाह ने चाहा तो अगले महीने हो जायेगी । १०५६

अम्मा: अब तक मुंह में घुघ्घी क्यों डाले बैठी थीं ? मेरी बेटी कोई लंगड़ी-लूली है जो ज़बरदस्ती गले बांध देती ? १०५७

अख़्तर: हैं, मैंने कब कहा कि लंगड़ी-लूली है । मोहसिना के बारे में भी तो सोचिये । इसी शर्त पर शादी हो रही है कि शमशाद उसकी नन्द से शादी करेगा । १०५८

अम्मा: यही सब करना था तो शमशाद और आमिना की बात १०५९

चलाई ही क्यों थी ? तुम्हारा बेटा दिन रात नाक रगड़ता था यहां । मेरी बेटी तो मुंह भी न लगाती, बहू ने ज़बरदस्ती ढकेला उसकी तरफ़ ।

अख़्तर: ही । अब ज़ुबान न खुलवाइये मेरी । इतनी ही परीजनी होती तो काज़िम मिर्ज़ा क्यों ठुकरा देते ? ऐं, मेरे बेटे को तो तरस आ गया था उसपर । १०६०

अम्मा: ख़ुदा की क़हर से डरो, अख़्तर बेगम, तुमने भी एक बेटी जनी है । मेरी आह लगी तो होना रिश्ता टूट जायेगा । ज़िन्दगी भर बैठी रहेगी कुंवारी । १०६१

अख़्तर: लानत है मुझ पर जो मैं एक बूंद पानी भी पिऊं इस घर का । कितने चाव से आई थी । १०६२

अम्मा: चाव से नहीं, तुम अपने मतलब से आई थीं । रुपया जो वसूल करवाना था तुम्हें । जैसी तू, वैसा तुम्हारा शौहर, वैसा तुम्हारा बेटा । १०६३

सलीम: जमीला, यह क्या फ़िज़ूल बहस लगा रखी है ? बन्द करो इसे । ख़ुदा जाने इसी में आमिना की कोई भलाई हो । १०६४

अम्मा: oo वह रोने लगती है oo १०६५
कम-से-कम इस वक़्त तो बहन की तरफ़दारी न कीजिये । शमशाद ने जैसे आमिना का दिल तोड़ा है, जैसे घात किया है उसके साथ । अल्लाह चाहेगा तो उसे भी घर बसाना

नसीब न होगा, कभी न होगा । आमिना तुम,
आमिना तुम...

00 आमिना अपने कमरे को जाती है । शादी के कपड़ों पर १०६६
हाथ फेरती है, कल्पना करती है कि शमशाद उसका
वर बनकर आया है ।

00 क़व्वाली सुनाई देती है । १०६७

मौला सलीम चिश्ती, आक़ा सलीम चिश्ती १०६८

इस संगे दर के सदक़े, इस रहगुज़र के सदक़े
भटके हुए मुसाफ़िर, मंज़िल पे पहुंचे आख़िर
उजड़े हुए चमन में, बेरंग पैरहन में
सौ रंग मुसकुराये, सौ फूल लहलहाये
आईं नई बहारें, आईं नई बहारें
पड़ने लगीं फुआरें
घूंघट की लाज रखना, इस सर पे ताज रखना

00 आमिना ब्लेड से अपनी नस काट देती है । १०६९

00 दृश्यान्तर । आंगन में अम्मा अख़्तर बेगम के व्यवहार से १०७०
ग़मगीन हैं ।

सलीम: सुनो, आमिना ने खाना खाया ? १०७१
00 वह आमिना के कमरे की ओर जाते हैं 00

आमिना, आमिना, आमिना ।
00 वह दरवाज़ा खोलते हैं 00

00 00 00 00

00 दृश्यान्तर । एक दफ़्तर में । इन्टरव्यू जारी है । १०७२

क़ाज़ी: मियां साहबज़ादे, अगर मैं तुम्हें रख लूं तो सब यही कहेंगे १०७३
कि मुसलमान ने मुसलमान को रख लिया ।

सिकन्दर: मगर क़ाज़ी साहब, मेरे क्वालिफ़िकेशन्ज़ भी तो हैं । १०७४
आप उन्हें भी तो देखिये ।

क़ाज़ी: देखीं, मियां, देखीं । लेकिन तुम्हारे वालिद पर जासूसी १०७५
का इल्ज़ाम है ।

सिकन्दर: बिल्कुल बकवास है । कोर्ट उन्हें हर इल्ज़ाम से बरी कर १०७६
चुका है ।

क़ाज़ी: कोर्ट का फ़ैसला कौन देखता है, मियां ? १०७७

सिकन्दर: आज तक किसी हिन्दू अफ़सर ने तो इस बात का ज़िक्र भी १०७८
नहीं किया ।

क़ाज़ी: इतने बड़े डिपार्टमेन्ट में मैं अकेला मुसलमान हूं । फूंक-फूंक १०७९
कर क़दम रखना पड़ता है ।

सिकन्दर: काज़ी साहब, मुझ जैसे न जाने कितने नौजवानों की १०८०
हक़तलफ़ी आप जैसे मुसलमान अफ़सरों की वजह से
हुई है ।

काज़ी: तुम लोगों की यही तो ख़राबी है कि फ़ौरन भड़क १०८१
जाते हो । मुझे देखो । मेरे भी रिश्तेदार कराची में
हैं, लेकिन मैं कभी ख़त-ओ-किताबत नहीं करता, न मालूम
कब कौन-सा इल्ज़ाम लग जाये । तुम्हारे वालिद को
क्या ज़रूरत थी नक़्शा भेजने की ?

०० दृश्यान्तर । बाज़ार में । सलीम मिर्ज़ा चले आ रहे हैं १०८२
और लोग उनपर ताने कस रहे हैं ।

एक व्यक्ति: अरे, पाकिस्तानी ऐजन्ट जा रिया है । १०८३

दूसरा: जासूस है, जासूस । कैसे छूट गया ? १०८४

अजमानी: आइये, आइये, मिर्ज़ा जी । क्या हालचाल है ? १०८५
आदाब अर्ज़ । फ़रमाइये ।

०० सलीम मिर्ज़ा को देखकर अजमानी साहब के साथ खड़े १०८६
सभी व्यक्ति मुंह फेरकर खिसक जाते हैं ।

अजमानी: फ़िक्र का कोई बात नहीं । दूसरे पांचों उंगली बराबर १०८७
नहीं होता । हम है न ? दूसरे अब तो आप बरी भी
हो गया है, सो इसी वास्ते ...

०० सलीम मिर्ज़ा घर की सीढ़ियां चढ़ते हुए अपनी बीवी से १०८८
कहते हैं ।

सलीम: लोग मुझे देखकर कतराते हैं । मुंह फेर लेते हैं । पास से १०८९
उठ जाते हैं । मुझे जासूस कहते हैं । भला यह भी कोई
ज़िन्दगी है ? बर्दाश्त की भी हद होती है । बहुत
बर्दाश्त किया, अब और नहीं किया जाता ।

अम्मा: मैं तो पहले ही जानती थी कि यहां एक न एक १०९०
दिन ऐसी बातें ज़रूर होंगी ।

सलीम: अब यह मालूम हो गया कि इस मुल्क में रहना नामुमकिन है । १०९१

सिकन्दर: अब्बू मियां, हमें हिन्दुस्तान से भागना नहीं, बल्कि १०९२
हिन्दुस्तान में रहकर आम आदमी के कांधे से कांधा मिलाकर
अपनी मांगों के लिये लड़ना चाहिये हमें ।

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा हिन्दुस्तान छोड़ने की तैयारी में १०९३
सामान बांध रहे हैं ।

अम्मा: पहले बोरिया बिस्तर बांध लेते तो न यह दिन देखना पड़ता, १०९४
न इतनी छीछालेदर होती ।

सलीम: जब तक आब-ओ-दाना न उठे, कोई अपनी जगह से नहीं १०९५
हिल सकता ।

अम्मा: वाह रे आब-ओ-दाना । जब आमिना को गाड़ लिया तब निकले यहां से। उसे ले के से पहले चलते तो शमशाद न सही, कोई और लड़का तो मिल जाता । १०९६

०० दृश्यान्तर । सलीम मिर्ज़ा घर से बाहर आकर सदर दरवाज़े पर ताला लगाते हैं और तांगे पर सवार होते हैं । १०९७

पड़ोसी: ख़ुदा हाफ़िज़ । ख़ुदा हाफ़िज़, मिर्ज़ा साहब । १०९८

सलीम मिर्ज़ा: ख़ुदा हाफ़िज़ । १०९९

पड़ोसी: लो भाई, आज मिर्ज़ा साहब भी चल दिये । ११००

तांगेवाला: सच्ची कहूं मियां, अब्बा जी थोड़ी अरबी फ़ारसी पढ़ा देते तो बोल ही देता । मेरा मन तो पहले ही बोले था एक दिन आप जाओगे ज़रूर ।
..... अरे परे हट जा, ओ साइकिल ११०१

०० इतने में कुछ नौजवान लड़कों का जुलूस नारे लगाते आता है । ११०२

तांगेवाला: ऐ है, यह हरामख़ोर कहां से आ गये, मियां ? ११०३

नारे: इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद, इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद,
इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद । हमारी मांगें पूरी करो । ११०४

०० जुलूस में सिकन्दर का एक दोस्त है । ११०५

दोस्त: सिकन्दर, तुम लोग कहां जा रहे हो ? ११०६

सिकन्दर: अब्बू । ११०७

सलीम: जाओ बेटा, अब मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा । इन्सान कब तक अकेला जी सकता है ? ११०८

अम्मा: सिकन्दर, सिकन्दर । ११०९

तांगेवाला: अरे, अरे छोटे मियां, तुम कहां को जा रहे हो ? १११०

०० सिकन्दर तांगे से उतरकर जुलूस में शामिल हो जाता है । ११११

नारे: इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद, हमारी मांगें पूरी करो ।
रोटी दो, रोटी दो । १११२

सलीम: जमीला, मैं भी अकेली ज़िन्दगी की घुटन से तंग आ गया हूं । १११३

अम्मा: हाय अल्लाह । १११४

सलीम: ०० वह तांगे से उतरते हैं ०० भल्ला, तांगा वापस ले जाओ । १११५

तांगेवाला: घर को ? १११६

सलीम: हाँ । ०० यह कहकर वह जुलूस में शामिल हो जाते हैं ०० १११७

आवाज़: जो दूर से तूफ़ान का करते हैं नज़ारा १११८
उनके लिये तूफ़ान वहां भी है यहां भी ।

धीरे में जो मिल जाओगे, बन जाओगे धारा
यह वक़्त का ऐलान वहां भी है यहां भी ।।

--- समाप्त ---